

कुण्डली फलादेश

Sample

यह मॉडल फलादेश एवं गणना का सबसे विस्तृत मॉडल है। 200 से अधिक पृष्ठों की यह लम्बी जन्मपत्रिका सर्वश्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण मॉडल है जिसमें वैदिक ज्योतिष के साथ-साथ अंकशास्त्र, लाल किताब, एस्ट्रोग्राफ एवं योगों की चर्चा की गई है। पराशर पत्रिका में पराशर, जैमिनी एवं के.पी पद्धतियों के अनुसार गणना की गई है जिसमें विंशोत्तरी एवं योगिनी दशा की गणना सूक्ष्म स्तर तक की गई है। इसमें रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान जैसे उपायों का भी विवरण है। इसमें पितृदोष, साढ़े साती एवं कालसर्प दोष की भी चर्चा इनके उपायों सहित की गई है।

इसमें आने वाले 10 वर्षों का फलादेश महादशा एवं अन्तर्दशा के फल के साथ किया गया है साथ ही इसमें 1 वर्ष की अवधि का मासिक फलादेश भी दिया गया है। जिसमें जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे स्वास्थ्य, वित्त, आजीविका, परिवार इत्यादि शामिल हैं।

Date: 11/06/2024



Sample

01 Apr 1987

10:15 AM

Delhi

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



Sample

लिंग _____ : पुल्लिंग
जन्म तिथि _____ : 01/04/1987
दिन _____ : बुधवार
जन्म समय _____ : 10:15:00 घंटे
इष्ट _____ : 10:06:41 घटी
स्थान _____ : Delhi
देश _____ : India

अक्षांश _____ : 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____ : 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____ : 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____ : -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____ : 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____ : 09:53:52 घंटे
वेलान्तर _____ : -00:04:04 घंटे
साम्पातिक काल _____ : 22:29:56 घंटे
सूर्योदय _____ : 06:12:19 घंटे
सूर्यास्त _____ : 18:38:35 घंटे
दिनमान _____ : 12:26:16 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____ : उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____ : उत्तर
ऋतु _____ : वसन्त
सूर्य के अंश _____ : 17:15:17 मीन
लग्न के अंश _____ : 28:04:11 वृष

अवकहड़ा चक्र
लग्न-लग्नाधिपति _____ : वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____ : मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____ : भरणी - 2
नक्षत्र स्वामी _____ : शुक्र
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : गर
गण _____ : मनुष्य
योनि _____ : गज
नाड़ी _____ : मध्य
वर्ण _____ : क्षत्रिय
वश्य _____ : चतुष्पाद
वर्ग _____ : मृग
युँजा _____ : पूर्व
हंसक _____ : अग्नि
जन्म नामाक्षर _____ : लू-लूनेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____ : लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____ : मेष



HoroScopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	चैत्र	11
पंजाबी	संवत : 2043	चैत्र	19
बंगाली	सन् : 1393	चैत्र	17
तमिल	संवत : 2043	पंगुनी	18
केरल	कोल्लम : 1162	मीनम	18
नेपाली	संवत : 2043	चैत्र	18
चैत्रादि	संवत : 2044	चैत्र	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2044	चैत्र	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्त काल _____ : 17:19:38
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : भरणी
नक्षत्र समाप्त काल _____ : 23:14:49 घंटे
जन्म योग _____ : भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : विष्कुम्भ
योग समाप्त काल _____ : 21:16:06 घंटे
जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्त काल _____ : 17:19:38 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 30:08:31
भभोग _____ : 62:38:03
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 10 वर्ष 3 मा 23 दि

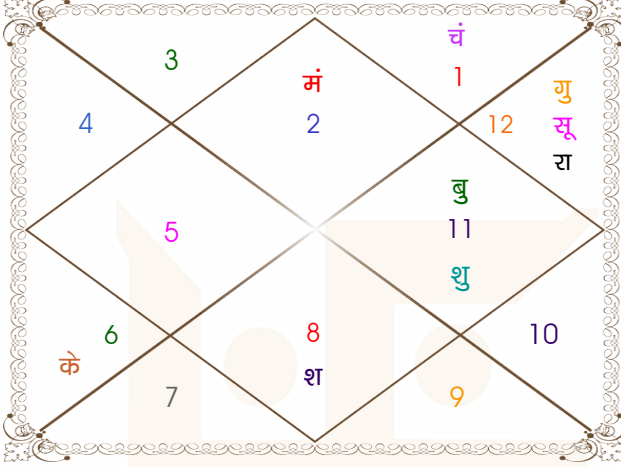
घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

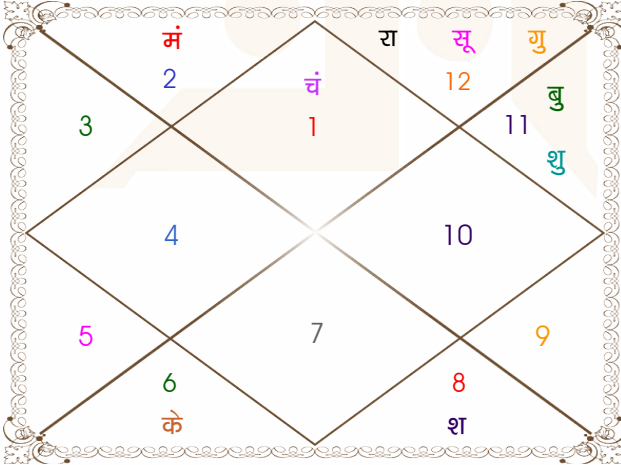


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा सू यु	चं	मं ल	
शु बु			
	श		के

लग्न कुंडली

मं ल	चं	गु रा	शु बु
के			श

विंशोत्तरी
शुक्र 10वर्ष 3मा 23दि
शुक्र

01/04/1987

24/07/2097

शुक्र	24/07/1997
सूर्य	24/07/2003
चन्द्र	24/07/2013
मंगल	24/07/2020
राहु	24/07/2038
गुरु	24/07/2054
शनि	24/07/2073
बुध	24/07/2090
केतु	24/07/2097

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 6मा 28दि
भद्रिका

28/10/2020

29/10/2025

भद्रिका	09/07/2021
उल्का	09/05/2022
सिद्धा	30/04/2023
संकटा	08/06/2024
मंगला	29/07/2024
पिंगला	08/11/2024
धान्या	09/04/2025
भामरी	29/10/2025



गणनी

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

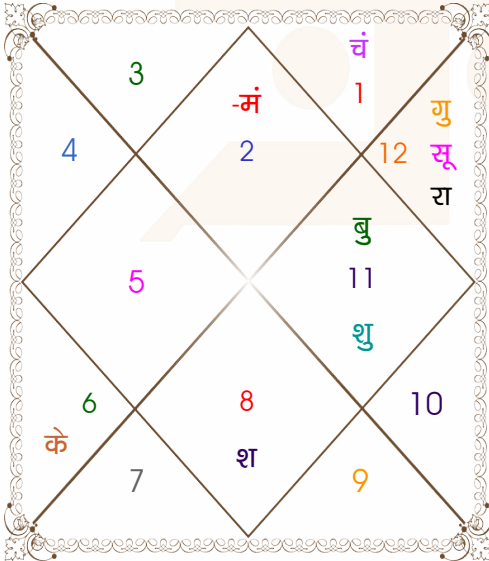
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	28:04:11	345:17:04	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	---
सूर्य			मीन	17:15:17	00:59:15	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मेष	19:47:27	12:46:39	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल			वृष	03:18:12	00:40:22	कृत्तिका	2	3	शुक्र	सूर्य	शनि	सम राशि
बुध			कुंभ	20:06:38	01:12:35	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	सम राशि
गुरु		अ	मीन	13:24:03	00:14:31	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	स्वराशि
शुक्र			कुंभ	10:31:38	01:11:47	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मित्र राशि
शनि		व	वृश्चि	27:29:04	00:00:06	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	17:49:18	00:00:09	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु			कन्या	17:49:18	00:00:09	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	03:03:01	00:00:00	मूल	1	19	गुरु	केतु	सूर्य	---
नेप			धनु	14:18:12	00:00:18	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो		व	तुला	15:39:45	00:01:26	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			कुंभ	12:00:22	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	शनि	--

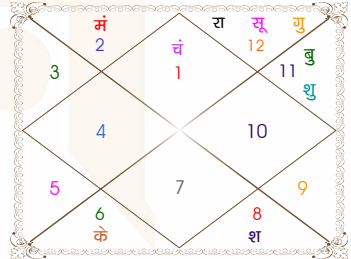
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:40

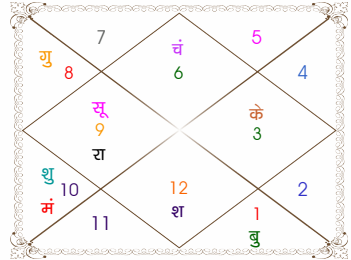
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 10:23:33	वृष 28:04:11
2	मिथुन 10:23:33	मिथुन 22:42:55
3	कर्क 05:02:16	कर्क 17:21:38
4	कर्क 29:41:00	सिंह 12:00:22
5	सिंह 29:41:00	कन्या 17:21:38
6	तुला 05:02:16	तुला 22:42:55
7	वृश्चिक 10:23:33	वृश्चिक 28:04:11
8	धनु 10:23:33	धनु 22:42:55
9	मकर 05:02:16	मकर 17:21:38
10	मकर 29:41:00	कुम्भ 12:00:22
11	कुम्भ 29:41:00	मीन 17:21:38
12	मेष 05:02:16	मेष 22:42:55

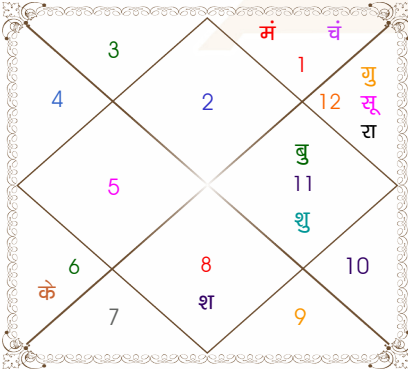
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	28:04:11
2	मिथुन	21:17:32
3	कर्क	14:49:03
4	सिंह	12:00:22
5	कन्या	15:09:55
6	तुला	22:33:41
7	वृश्चिक	28:04:11
8	धनु	21:17:32
9	मकर	14:49:03
10	कुम्भ	12:00:22
11	मीन	15:09:55
12	मेष	22:33:41

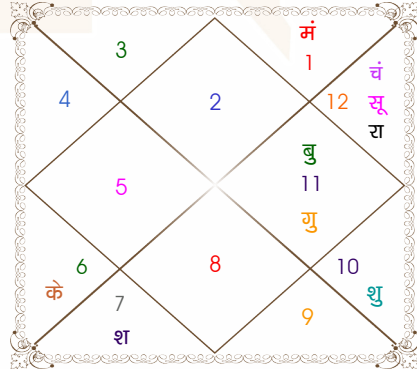
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



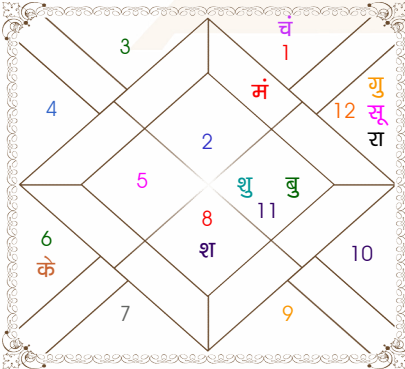
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----			रश्मि	ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि		
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	मुदित	आगम	8.74	30 %
चंद्र	भातृ	मातृ	वृद्ध	शान्त	उपवेशन	10.01	35 %
मंगल	कलत्र	भातृ	मृत	निपीदित	कौतुक	2.82	31 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	वृद्ध	निपीदित	आगमन	0.83	64 %
गुरु	पुत्र	धन	युवा	विकल	प्रकाश	0.00	37 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	मुदित	उपवेशन	7.91	19 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	खल	आगम	1.58	19 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	निपीदित	उपवेशन	0.00	97 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	आगम	0.00	97 %
कुल						31.89	

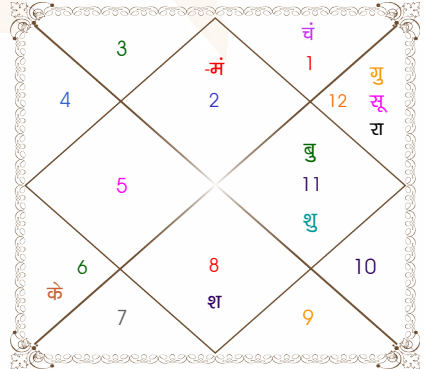
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



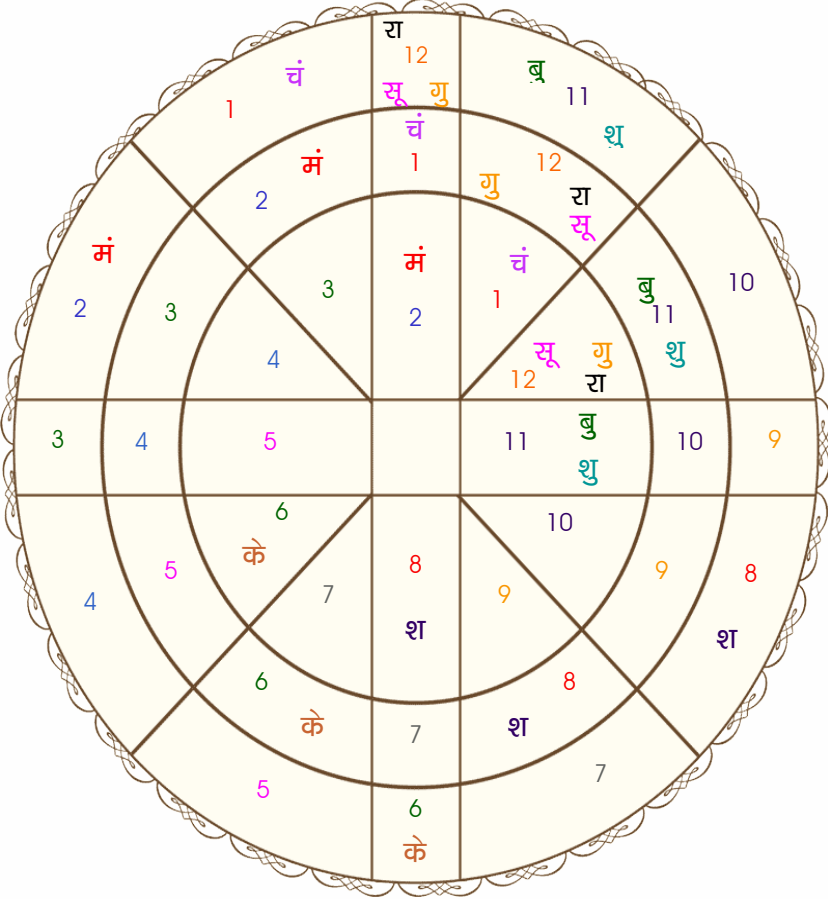
HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



कृष्णमूर्ति पद्धति

इन पृष्ठों में ज्योतिष की कृष्णमूर्ति पद्धति से संबंधित आपके सभी आवश्यक विवरण दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष का मिश्रण है जिसमें ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण शाखाओं से महत्वपूर्ण सिद्धांत लिए गए हैं। वर्तमान समय में यह ज्योतिष की सर्वाधिक सटीक एवं विशुद्ध पद्धति मानी जाती है जिसे सीखना तथा लागू करना बेहद आसान है। हिंदू शास्त्रीय ज्योतिष के विपरीत कृष्णमूर्ति पद्धति क्रमबद्ध एवं अच्छी तरह से परिभाषित है। कृष्णमूर्ति पद्धति के लाभ हेइ समें इस पद्धति से संबंधित आंकड़े यथा कस्पल चार्ट, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप स्वामी, उप उप स्वामी सभी ग्रहों के दिए गए हैं साथ ही निरयण भाव, भावों के कारक, कारक ग्रह आदि भी सम्मिलित किए गए हैं। इतना ही नहीं, इसमें दृष्टि युति, भाव मध्य आदि भी शुद्ध गणना के साथ दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति

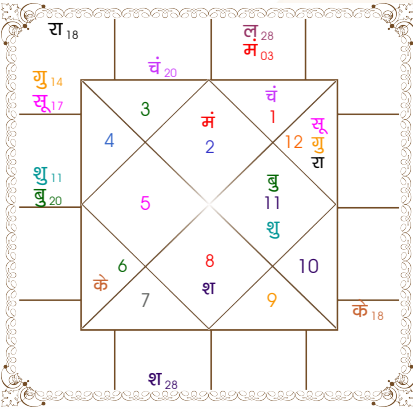
भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 1 मास 28 दिन

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	17:21:24	गुरु	बुध	बुध	शुक्र	1	वृष	28:10:19	शुक्र	मंगल	शनि	शनि
चंद्र		मेष	19:53:35	मंगल	शुक्र	राहु	चंद्र	2	मिथु	21:23:39	बुध	गुरु	गुरु	चंद्र
मंगल		वृष	03:24:20	शुक्र	सूर्य	शनि	बुध	3	कर्क	14:55:10	चंद्र	शनि	गुरु	गुरु
बुध		कुंभ	20:12:46	शनि	गुरु	गुरु	गुरु	4	सिंह	12:06:29	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र
गुरु		मीन	13:30:10	गुरु	शनि	राहु	शनि	5	कन्या	15:16:02	बुध	चंद्र	गुरु	चंद्र
शुक्र		कुंभ	10:37:45	शनि	राहु	शनि	शनि	6	तुला	22:39:49	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
शनि	व	वृश्चि	27:35:12	मंगल	बुध	गुरु	मंगल	7	वृश्चि	28:10:19	मंगल	बुध	शनि	शनि
राहु		मीन	17:55:25	गुरु	बुध	बुध	राहु	8	धनु	21:23:39	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
केतु		कन्या	17:55:25	बुध	चंद्र	बुध	बुध	9	मक	14:55:10	शनि	चंद्र	गुरु	शुक्र
हर्ष		धनु	03:09:08	गुरु	केतु	सूर्य	राहु	10	कुंभ	12:06:29	शनि	राहु	शनि	राहु
नेप		धनु	14:24:19	गुरु	शुक्र	शुक्र	राहु	11	मीन	15:16:02	गुरु	शनि	गुरु	शनि
प्लूटो	व	तुला	15:45:52	शुक्र	राहु	शुक्र	चंद्र	12	मेष	22:39:49	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र

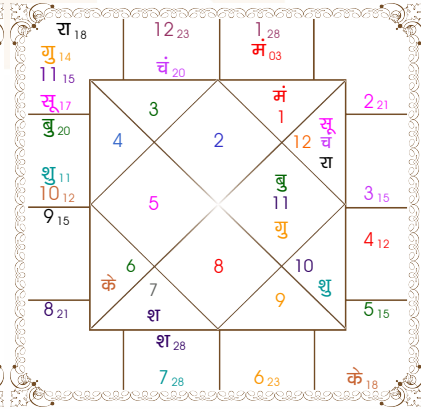
के.पी. अयनांश : 23:34:33

फॉरच्युना : कर्क 00:42:29

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- शुक्र-
2	सूर्य- बुध- शनि- राहु-
3	चंद्र- केतु-
4	सूर्य- मंगल-
5	सूर्य- बुध- शनि- राहु- केतु,
6	चंद्र- गुरु, शुक्र- शनि,
7	मंगल-
8	बुध- गुरु-
9	चंद्र, गुरु- शुक्र, शनि-
10	सूर्य, बुध+ गुरु+ शनि+ राहु,
11	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध- गुरु- शुक्र, राहु, केतु,
12	मंगल,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 4- 5- 10, 11,
चंद्र	1- 3- 6- 9, 11,
मंगल	4- 7- 11, 12,
बुध	2- 5- 8- 10+ 11-
गुरु	6, 8- 9- 10+ 11-
शुक्र	1- 6- 9, 11,
शनि	2- 5- 6, 9- 10+
राहु	2- 5- 10, 11,
केतु	3- 5, 11,

स्वामित्व

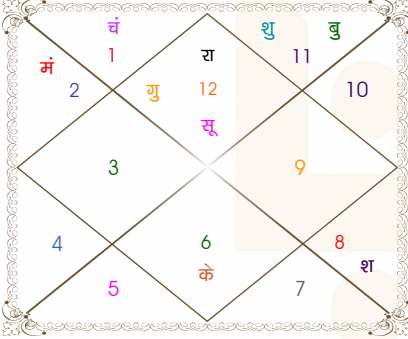
लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	राहु



षोडशवर्ग चक्र

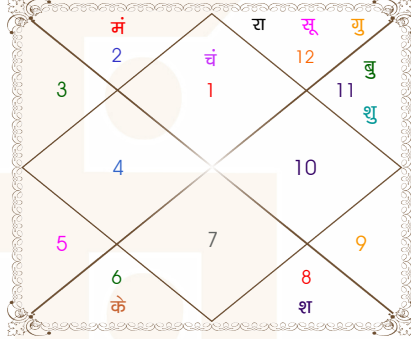
वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली



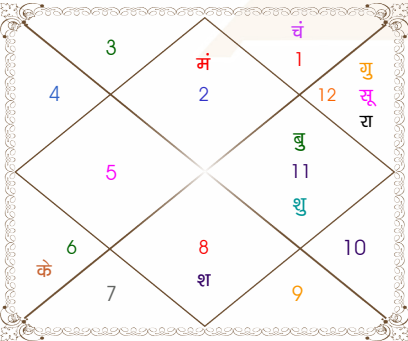
आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली



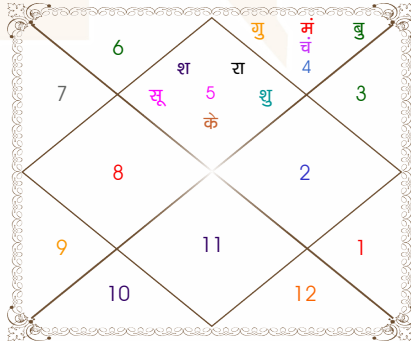
मनोबलविचारः

लग्न कुंडली



देह विचारः

होरा कुंडली



सम्पदविचारः



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

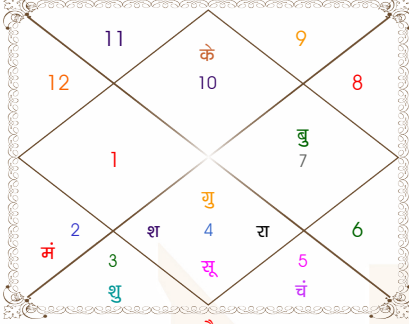
E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



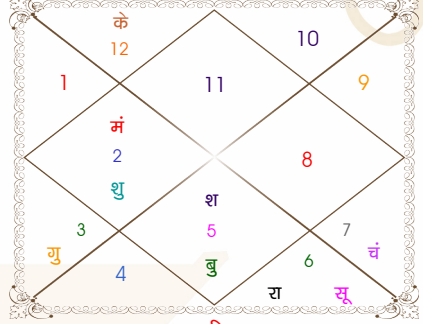
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



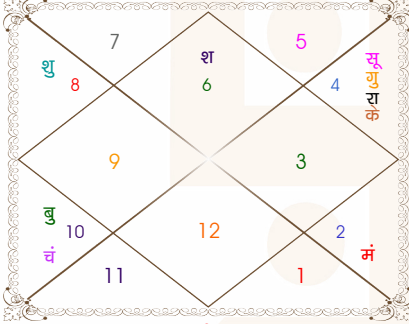
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



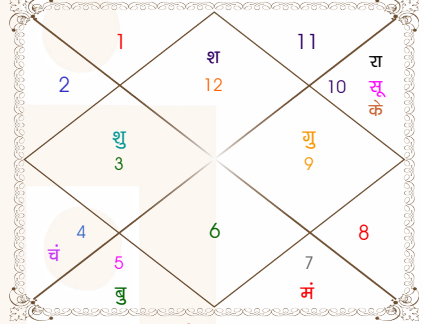
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



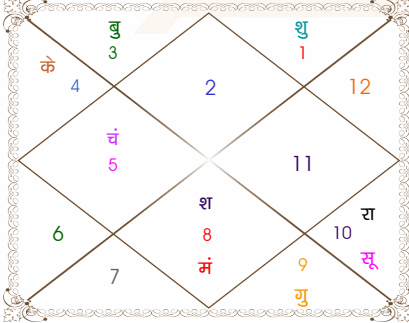
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



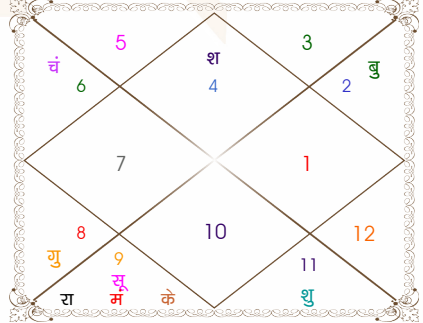
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः



HoroscopeCart

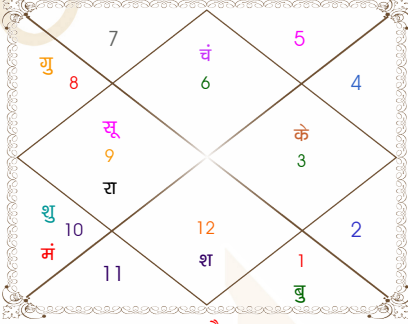
Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

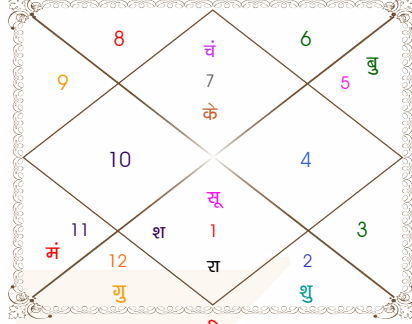
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



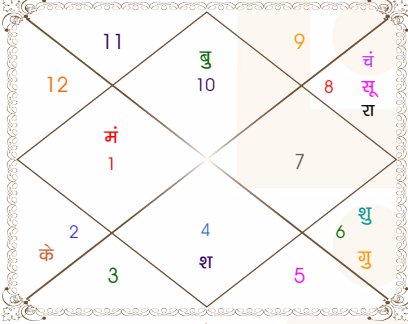
कलत्र सोख्यम

दशमांश कुंडली



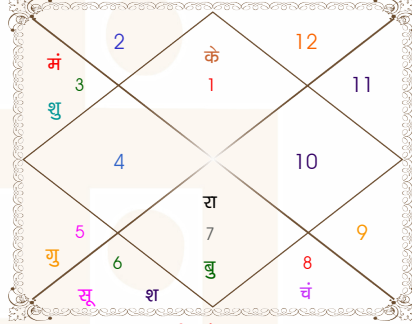
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



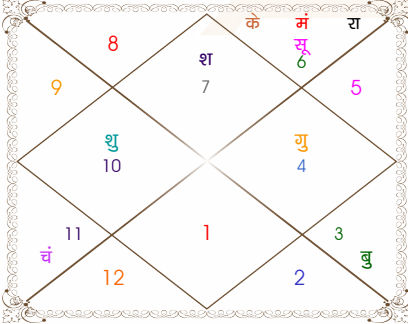
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



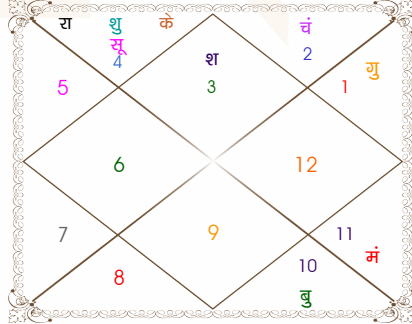
पितृसोख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

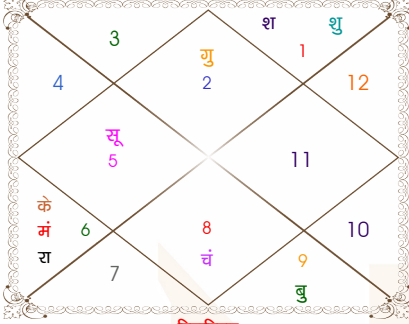
E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



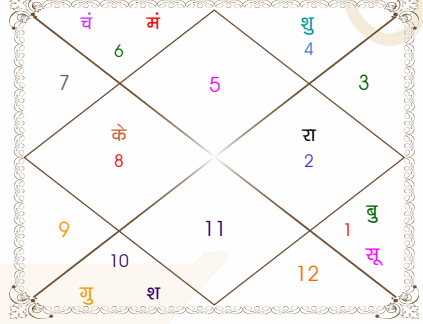
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशंश कुंडली



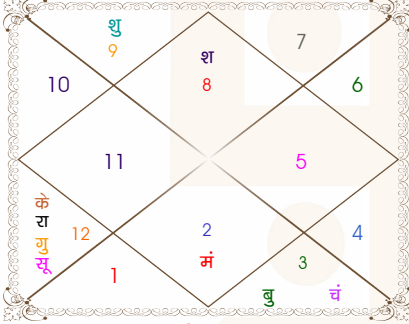
विद्याविचारः

सप्तविंशंश कुंडली



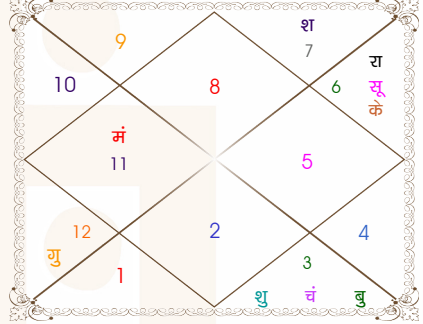
बलाबलज्ञानम्

त्रिंशंश कुंडली



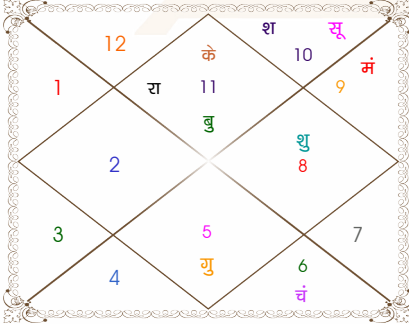
अरिष्टज्ञानम्

स्रवेदांश कुंडली



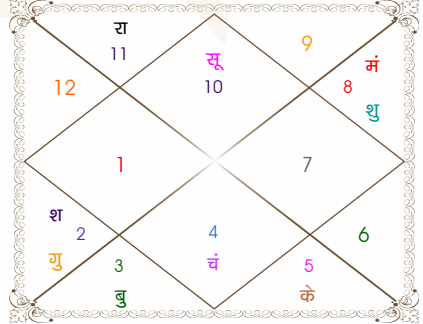
शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	मीन	मेष	वृष	कुंभ	मीन	कुंभ	वृश्चि	मीन	कन्या
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेक्काण	मक	कर्क	सिंह	वृष	तुला	कर्क	मिथु	कर्क	कर्क	मक
चतुर्थांश	कुंभ	कन्या	तुला	वृष	सिंह	मिथु	वृष	सिंह	कन्या	मीन
सप्तमांश	वृष	मक	सिंह	वृश्चि	मिथु	धनु	मेष	वृश्चि	मक	कर्क
नवमांश	कन्या	धनु	कन्या	मक	मेष	वृश्चि	मक	मीन	धनु	मिथु
दशमांश	तुला	मेष	तुला	कुंभ	सिंह	मीन	वृष	मेष	मेष	तुला
द्वादशांश	मेष	कन्या	वृश्चि	मिथु	तुला	सिंह	मिथु	कन्या	तुला	मेष
षोडशांश	तुला	कन्या	कुंभ	कन्या	मिथु	कर्क	मक	तुला	कन्या	कन्या
विंशांश	मिथु	कर्क	वृष	कुंभ	मक	मेष	कर्क	मिथु	कर्क	कर्क
चतुर्विंशांश	वृष	सिंह	वृश्चि	कन्या	धनु	वृष	मेष	मेष	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	सिंह	मेष	कन्या	कन्या	मेष	मक	कर्क	मक	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	वृश्चि	मीन	मिथु	वृष	मिथु	मीन	धनु	वृश्चि	मीन	मीन
ख्रवेदांश	वृश्चि	कन्या	मिथु	कुंभ	मिथु	मीन	मिथु	तुला	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	कुंभ	मक	कन्या	धनु	कुंभ	सिंह	वृश्चि	मक	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	मक	मक	कर्क	वृश्चि	मिथु	वृष	वृश्चि	वृष	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
बुध	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
गुरु	4 चामर	5 छत्र	7 देवलोक	8 चन्दनवन
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	4 नागपुष्प
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	4 नागपुष्प
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक

विशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.10	17.00	12.80	13.25	17.90	14.65	6.80	8.50	7.70
सप्तवर्ग	12.08	17.15	13.63	14.13	18.05	14.68	6.75	8.73	7.30
दशवर्ग	11.08	16.93	14.90	16.48	16.15	15.15	10.35	9.70	6.88
षोडशवर्ग	11.38	16.50	13.68	16.53	15.93	15.53	10.93	9.90	6.85



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---



षड्बल और अष्टकवर्ग

जन्मकुंडली में ग्रहों एवं भावों के बिल्कुल सही बल को जानें।

किसी भी ग्रह के सही बल का निर्धारण भचक्र में उस ग्रह की स्थिति का विश्लेषण कर किया जाता है। ग्रहों की भिन्न-भिन्न स्थिति षड्बल के अलग-अलग शक्तियों को दर्शाते हैं। किसी ग्रह का बल अथवा उसकी कमजोरी का पता उसके षड्बल पर निर्भर करता है। षड्बल एवं भावबल सारणी को देखकर आप पता कर सकते हैं कि कौन सा ग्रह आपकी कुंडली में कितना मजबूत है। भावबल के द्वारा जन्मकुंडली के सभी 12 भावों के बल का ज्ञान होता है। इससे साफ निर्देश मिल जाता है कि जीवन के किस क्षेत्र में आप बलशाली हैं अथवा जीवन के किस पहलू में आपकी कमजोरी एवं असफलता छिपी हुई है।

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	52	56	28	8	23	45	48
सप्तवर्गज बल	92	150	109	113	165	98	36
ओजयुग्मक बल	15	15	0	30	0	15	0
केन्द्र बल	30	15	60	60	30	60	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	0	0
कुल स्थान बल	189	236	212	211	218	217	143
कुल दिग्बल	48	23	33	27	35	0	60
नतोन्नत बल	49	11	11	60	49	49	11
पक्ष बल	49	98	49	11	11	11	49
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	71	9	55	38	34	17	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	170	119	175	244	154	77	135
कुल चेष्टाबल	0	0	18	24	1	24	38
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-8	8	14	-22	-9	-22	-11
कुल षट्बल	459	436	470	510	432	339	373
रूप षट्बल	7.7	7.3	7.8	8.5	7.2	5.6	6.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.2	1.6	1.2	1.1	1.0	1.2
संबंधित पद	2	5	1	4	6	7	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	41.99	24.56	22.83	14.25	3.39	32.38	42.31
कष्ट फल	14.14	14.71	36.32	42.85	47.05	23.76	16.70

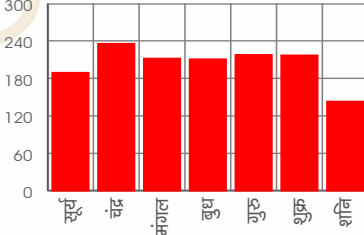
भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	339	510	436	459	510	339	470	432	373	373	432	470
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	40	10	30	10	40
भावदृष्टि बल	57	43	28	61	83	40	37	-12	-12	-22	-8	27
कुल भाव बल	426	603	515	520	613	389	567	460	371	381	435	537
रूप भाव बल	7.1	10.1	8.6	8.7	10.2	6.5	9.4	7.7	6.2	6.3	7.2	8.9
संबंधित पद	9	2	6	5	1	10	3	7	12	11	8	4

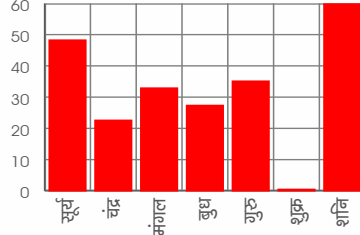


षट्बल ग्राफ

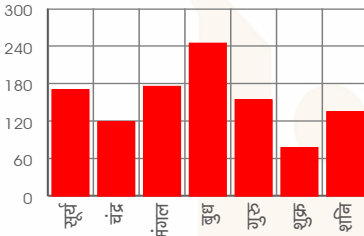
स्थान बल



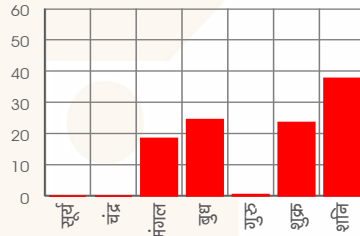
दिग्बल



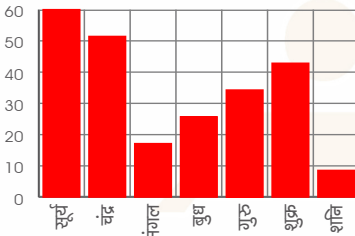
कालबल



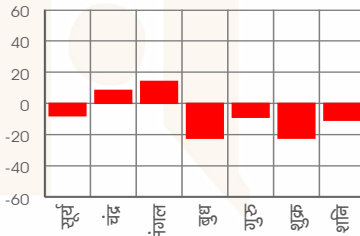
चेष्टाबल



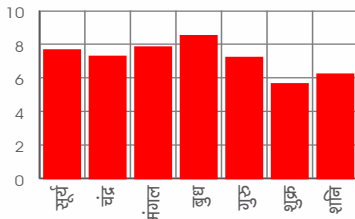
नैसर्गिक बल



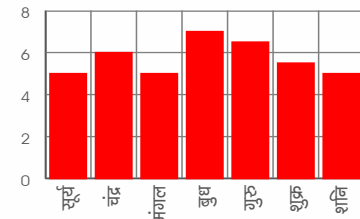
दृग्बल



रूप षट्बल



न्यूनतम षट्बल



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

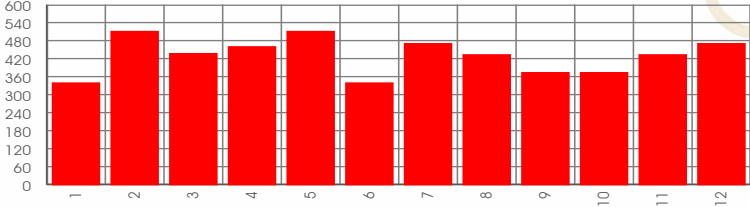
E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

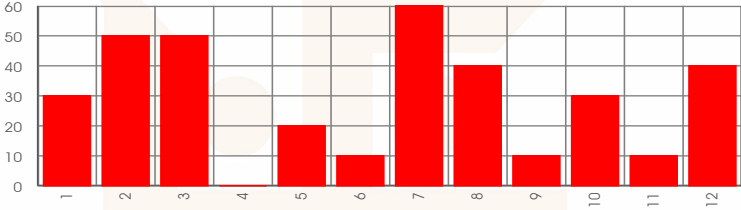


भाव बल ग्राफ

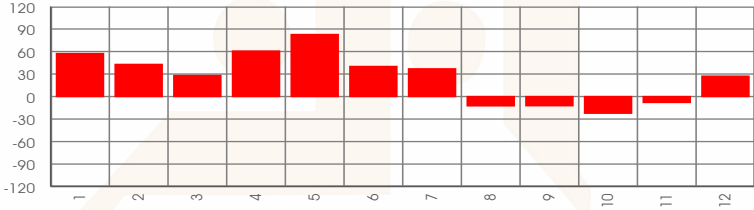
भावाधिपति बल



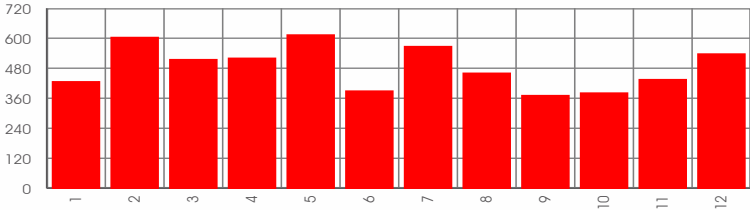
भावदिग्बल



भावदृष्टि बल

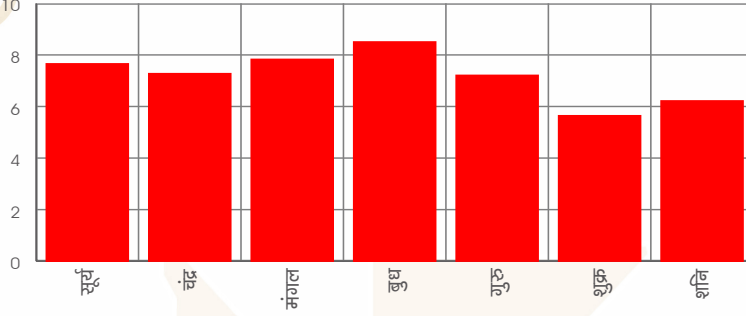


भाव बल

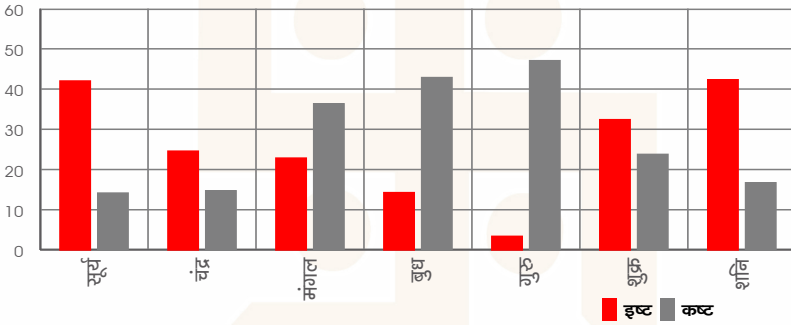


षट्बल तथा भावबल ग्राफ

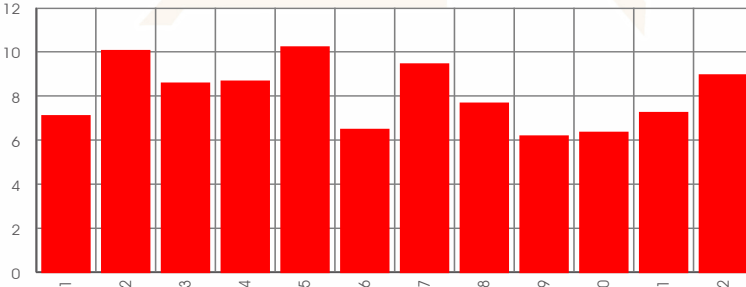
रूप षट्बल



दृष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

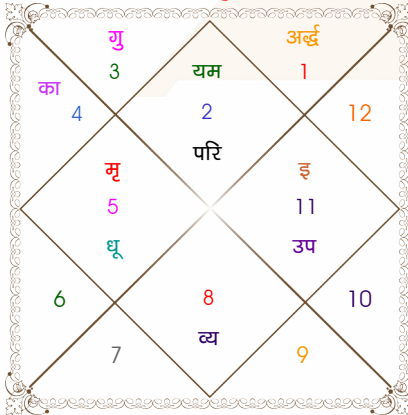


उपग्रह एवं आरूढ़

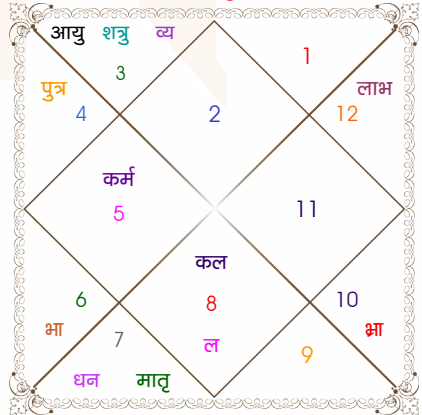
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	28:04:11	--	--	मृगशिरा	2	5
गुलिक	गु	मिथु	27:24:44	--	--	पुनर्वसु	3	7
काल	का	कर्क	17:32:59	--	--	आश्लेषा	1	9
मृत्यु	मृ	सिंह	27:48:50	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
यमघंटक	यम	वृष	14:16:37	--	--	रोहिणी	2	4
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मेष	17:34:33	--	--	भरणी	2	2
धूम	धू	सिंह	00:35:17	उच्च	--	मघा	1	10
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	29:24:43	उच्च	--	ज्येष्ठा	4	18
परिवेश	परि	वृष	29:24:43	--	--	मृगशिरा	2	5
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	00:35:17	--	--	घनिष्ठा	3	23
उपकेतु	उप	कुंभ	17:15:17	उच्च	--	शतभिषा	4	24
मांदी	मांदी	कर्क	13:21:39	--	--	पुष्य	4	8

प्राणपद	:	धनु	00:37:51	कारकाँश लग्न	:	मीन	07:21:36
भाव लग्न	:	कर्क	28:44:19	होरा लग्न	:	कन्या	29:24:26
घटी लग्न	:	मक	20:35:55	वर्णद लग्न	:	सिंह	02:31:23

उपग्रह कुंडली



आरूढ़ कुंडली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	धि	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	0	8	
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	0	1	0	0	0	1	1	1	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	6
कुल	3	3	2	5	5	5	3	3	5	4	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	धि	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0	4
कुल	5	3	5	2	3	6	6	2	5	4	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	धि	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	0	7	
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
कुल	4	4	5	4	3	1	2	5	3	5	2	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	धि	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	8	3	2	5	5	4	5	3	4	5	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	धि	म	कुं	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9	
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	0	6	
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9	
कुल	7	3	6	6	2	3	3	7	5	6	4	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	धि	म	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9	
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	4	5	4	3	5	6	4	3	5	3	5	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृ	धि	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6	
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	7	
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
कुल	1	3	5	4	4	3	1	2	5	2	5	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	धि	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	कुल
शनि	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	4	4	3	5	3	3	3	4	7	6	3	49



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	1	2	5	2	5	4	1	3	5	4	4	39
गुरु	3	6	6	2	3	3	7	5	6	4	4	7	56
मंगल	1	4	4	5	4	3	1	2	5	3	5	2	39
सूर्य	3	2	5	5	5	3	3	5	4	6	4	3	48
शुक्र	4	3	5	6	4	3	5	3	5	5	4	5	52
बुध	2	5	5	4	5	3	4	5	5	5	8	3	54
चंद्र	5	3	5	2	3	6	6	2	5	4	4	4	49
बिन्दु	21	24	32	29	26	26	30	23	33	32	33	28	337
रेखा	35	32	24	27	30	30	26	33	23	24	23	28	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	0	4	0	4	2	0	1	4	2	3	21
गुरु	0	3	2	0	0	0	3	3	3	1	0	5	20
मंगल	0	1	3	3	3	0	0	0	4	0	4	0	18
सूर्य	0	0	2	2	2	1	0	2	1	4	1	0	15
शुक्र	0	0	1	3	0	0	1	0	1	2	0	2	10
बुध	0	2	1	1	3	0	0	2	3	2	4	0	18
चंद्र	2	0	1	0	0	3	2	0	2	1	0	2	13
रेखा	3	6	10	13	8	8	8	7	15	14	11	12	115

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	0	4	0	4	2	0	0	2	2	3	18
गुरु	0	3	2	0	0	0	0	3	0	1	0	5	14
मंगल	0	1	3	3	3	0	0	0	4	0	4	0	18
सूर्य	0	0	1	2	2	1	0	2	1	3	1	0	13
शुक्र	0	0	1	3	0	0	1	0	0	2	0	2	9
बुध	0	2	1	1	3	0	0	2	3	0	4	0	16
चंद्र	2	0	1	0	0	2	2	0	0	1	0	2	10
रेखा	3	6	9	13	8	7	5	7	8	9	11	12	98

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	92	75	156	149	135	61	125
ग्रह पिंड	22	40	56	74	114	30	74
शोध्य पिंड	114	115	212	223	249	91	199



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

सूर्य का अष्टकवर्ग

5	3	3	1	3
5	3	2	1	3
4	2	2	12	
5	5	4	11	
5	5			
6	8	10	6	
3	7	5	9	6
3	3	4		

32	21			
29	3	24	1	28
4	2		12	
26	33		11	
5	5			
6	8	10	32	
26	7	23	9	32
30	33			

चंद्र का अष्टकवर्ग

5	5			
2	3	3	1	4
4	2		12	
3	4		11	
5	5			
6	8	10	4	
6	7	2	9	4
6	6	5		

मंगल का अष्टकवर्ग

4	1			
5	3	4	1	2
4	2		12	
4	5		11	
5	5			
6	8	10	3	
3	7	2	9	3
1	5			

बुध का अष्टकवर्ग

5	2			
4	3	5	1	3
4	2		12	
5	8		11	
5	5			
6	8	10	5	
3	7	5	9	5
4	5			

गुरु का अष्टकवर्ग

6	3			
2	3	6	1	7
4	2		12	
3	4		11	
5	5			
6	8	10	4	
3	7	5	9	4
7	6			

शुक्र का अष्टकवर्ग

5	4			
6	3	3	1	5
4	2		12	
4	4		11	
5	5			
6	8	10	5	
3	7	3	9	5
5	5			

शनि का अष्टकवर्ग

2	3			
5	3	1	1	4
4	2		12	
2	4		11	
5	5			
6	8	10	5	
5	7	1	9	5
4	3			

लग्न का अष्टकवर्ग

4	3			
4	3	4	1	6
4	2		12	
3	7		11	
5	5			
6	8	10	4	
5	7	3	9	4
3	3			



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

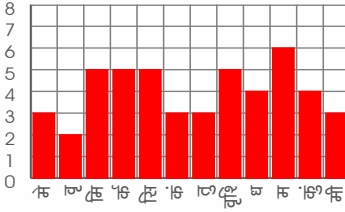
E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

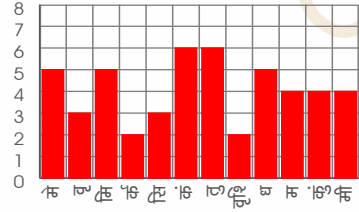


भिन्नाष्टक ग्राफ

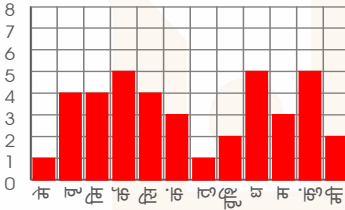
सूर्य



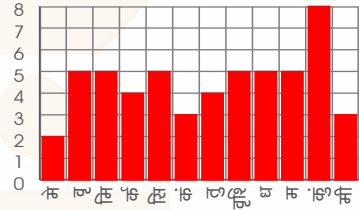
चन्द्र



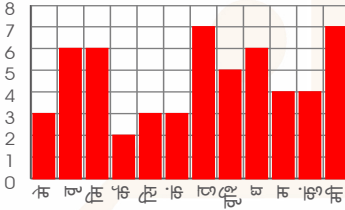
मंगल



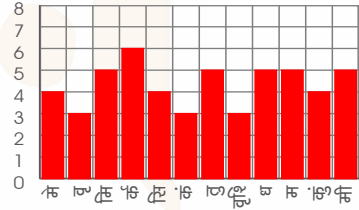
बुध



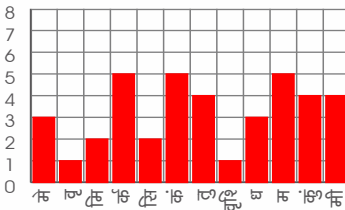
गुरु



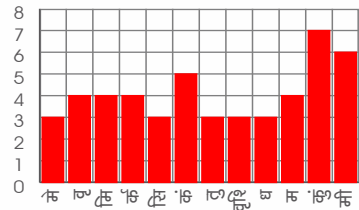
शुक्र



शनि

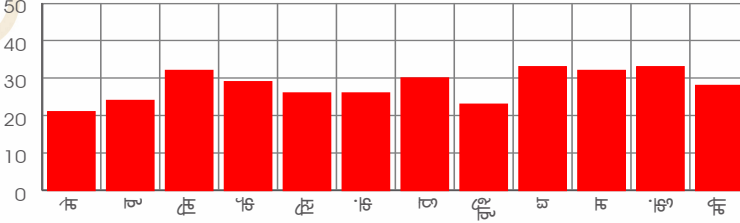


लग्न

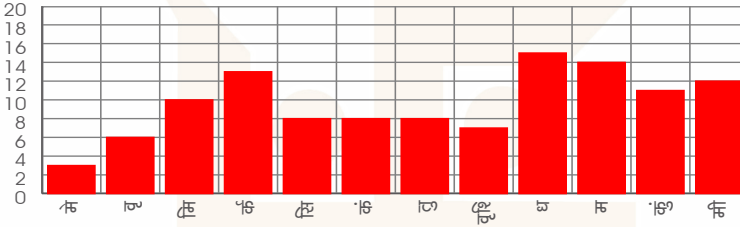


अष्टकवर्ग ग्राफ

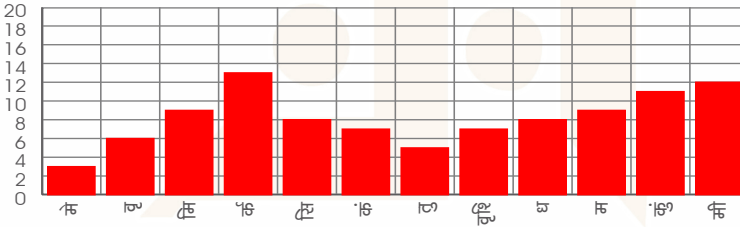
सर्वाष्टकवर्ग



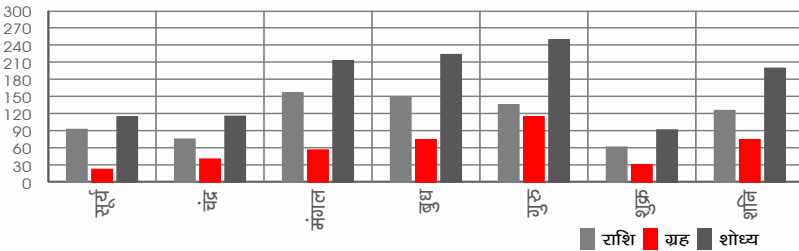
त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



शोध्य पिंड



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी वा बुरी दशाओं में प्रलियिबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएँ घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्वान्व समस्याओं, पीडा जनित कष्ट, बाधा, अलफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 3 मास 23 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
01/04/1987	24/07/1997	24/07/2003	24/07/2013	24/07/2020
24/07/1997	24/07/2003	24/07/2013	24/07/2020	24/07/2038
00/00/0000	सूर्य 11/11/1997	चंद्र 24/05/2004	मंगल 20/12/2013	राहु 06/04/2023
00/00/0000	चंद्र 12/05/1998	मंगल 23/12/2004	राहु 08/01/2015	गुरु 29/08/2025
00/00/0000	मंगल 17/09/1998	राहु 24/06/2006	गुरु 15/12/2015	शनि 05/07/2028
01/04/1987	राहु 12/08/1999	गुरु 24/10/2007	शनि 22/01/2017	बुध 23/01/2031
राहु 23/09/1987	गुरु 30/05/2000	शनि 24/05/2009	बुध 20/01/2018	केतु 10/02/2032
गुरु 24/05/1990	शनि 12/05/2001	बुध 24/10/2010	केतु 18/06/2018	शुक्र 10/02/2035
शनि 24/07/1993	बुध 18/03/2002	केतु 25/05/2011	शुक्र 18/08/2019	सूर्य 05/01/2036
बुध 24/05/1996	केतु 24/07/2002	शुक्र 22/01/2013	सूर्य 24/12/2019	चंद्र 06/07/2037
केतु 24/07/1997	शुक्र 24/07/2003	सूर्य 24/07/2013	चंद्र 24/07/2020	मंगल 24/07/2038

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
24/07/2038	24/07/2054	24/07/2073	24/07/2090	24/07/2097
24/07/2054	24/07/2073	24/07/2090	24/07/2097	00/00/0000
गुरु 10/09/2040	शनि 27/07/2057	बुध 21/12/2075	केतु 20/12/2090	शुक्र 23/11/2100
शनि 25/03/2043	बुध 05/04/2060	केतु 17/12/2076	शुक्र 19/02/2092	सूर्य 24/11/2101
बुध 30/06/2045	केतु 15/05/2061	शुक्र 18/10/2079	सूर्य 26/06/2092	चंद्र 25/07/2103
केतु 06/06/2046	शुक्र 15/07/2064	सूर्य 23/08/2080	चंद्र 25/01/2093	मंगल 24/09/2104
शुक्र 04/02/2049	सूर्य 27/06/2065	चंद्र 23/01/2082	मंगल 24/06/2093	राहु 02/04/2107
सूर्य 23/11/2049	चंद्र 26/01/2067	मंगल 20/01/2083	राहु 12/07/2094	00/00/0000
चंद्र 25/03/2051	मंगल 06/03/2068	राहु 08/08/2085	गुरु 18/06/2095	00/00/0000
मंगल 29/02/2052	राहु 11/01/2071	गुरु 14/11/2087	शनि 27/07/2096	00/00/0000
राहु 24/07/2054	गुरु 24/07/2073	शनि 24/07/2090	बुध 24/07/2097	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 10 वर्ष 4 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु
01/04/1987	23/09/1987	24/05/1990	24/07/1993	24/05/1996
23/09/1987	24/05/1990	24/07/1993	24/05/1996	24/07/1997
00/00/0000	गुरु 31/01/1988	शनि 23/11/1990	बुध 18/12/1993	केतु 18/06/1996
00/00/0000	शनि 03/07/1988	बुध 06/05/1991	केतु 16/02/1994	शुक्र 28/08/1996
00/00/0000	बुध 18/11/1988	केतु 13/07/1991	शुक्र 07/08/1994	सूर्य 18/09/1996
00/00/0000	केतु 14/01/1989	शुक्र 22/01/1992	सूर्य 28/09/1994	चंद्र 24/10/1996
00/00/0000	शुक्र 26/06/1989	सूर्य 19/03/1992	चंद्र 23/12/1994	मंगल 17/11/1996
01/04/1987	सूर्य 13/08/1989	चंद्र 24/06/1992	मंगल 22/02/1995	राहु 20/01/1997
सूर्य 21/04/1987	चंद्र 02/11/1989	मंगल 30/08/1992	राहु 27/07/1995	गुरु 18/03/1997
चंद्र 21/07/1987	मंगल 29/12/1989	राहु 20/02/1993	गुरु 12/12/1995	शनि 25/05/1997
मंगल 23/09/1987	राहु 24/05/1990	गुरु 24/07/1993	शनि 24/05/1996	बुध 24/07/1997

सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु
24/07/1997	11/11/1997	12/05/1998	17/09/1998	12/08/1999
11/11/1997	12/05/1998	17/09/1998	12/08/1999	30/05/2000
सूर्य 29/07/1997	चंद्र 26/11/1997	मंगल 20/05/1998	राहु 05/11/1998	गुरु 20/09/1999
चंद्र 08/08/1997	मंगल 06/12/1997	राहु 08/06/1998	गुरु 19/12/1998	शनि 05/11/1999
मंगल 14/08/1997	राहु 03/01/1998	गुरु 25/06/1998	शनि 09/02/1999	बुध 16/12/1999
राहु 30/08/1997	गुरु 27/01/1998	शनि 15/07/1998	बुध 28/03/1999	केतु 02/01/2000
गुरु 14/09/1997	शनि 25/02/1998	बुध 02/08/1998	केतु 16/04/1999	शुक्र 20/02/2000
शनि 01/10/1997	बुध 23/03/1998	केतु 10/08/1998	शुक्र 10/06/1999	सूर्य 06/03/2000
बुध 17/10/1997	केतु 03/04/1998	शुक्र 31/08/1998	सूर्य 26/06/1999	चंद्र 30/03/2000
केतु 23/10/1997	शुक्र 03/05/1998	सूर्य 06/09/1998	चंद्र 24/07/1999	मंगल 16/04/2000
शुक्र 11/11/1997	सूर्य 12/05/1998	चंद्र 17/09/1998	मंगल 12/08/1999	राहु 30/05/2000

सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र
30/05/2000	12/05/2001	18/03/2002	24/07/2002	24/07/2003
12/05/2001	18/03/2002	24/07/2002	24/07/2003	24/05/2004
शनि 24/07/2000	बुध 25/06/2001	केतु 26/03/2002	शुक्र 23/09/2002	चंद्र 19/08/2003
बुध 11/09/2000	केतु 13/07/2001	शुक्र 16/04/2002	सूर्य 11/10/2002	मंगल 06/09/2003
केतु 01/10/2000	शुक्र 03/09/2001	सूर्य 23/04/2002	चंद्र 11/11/2002	राहु 21/10/2003
शुक्र 28/11/2000	सूर्य 18/09/2001	चंद्र 03/05/2002	मंगल 02/12/2002	गुरु 01/12/2003
सूर्य 15/12/2000	चंद्र 14/10/2001	मंगल 11/05/2002	राहु 26/01/2003	शनि 18/01/2004
चंद्र 13/01/2001	मंगल 01/11/2001	राहु 30/05/2002	गुरु 16/03/2003	बुध 01/03/2004
मंगल 03/02/2001	राहु 18/12/2001	गुरु 16/06/2002	शनि 12/05/2003	केतु 19/03/2004
राहु 27/03/2001	गुरु 28/01/2002	शनि 06/07/2002	बुध 03/07/2003	शुक्र 09/05/2004
गुरु 12/05/2001	शनि 18/03/2002	बुध 24/07/2002	केतु 24/07/2003	सूर्य 24/05/2004



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध
24/05/2004	23/12/2004	24/06/2006	24/10/2007	24/05/2009
23/12/2004	24/06/2006	24/10/2007	24/05/2009	24/10/2010
मंगल 05/06/2004	राहु 15/03/2005	गुरु 28/08/2006	शनि 23/01/2008	बुध 05/08/2009
राहु 07/07/2004	गुरु 27/05/2005	शनि 13/11/2006	बुध 14/04/2008	केतु 05/09/2009
गुरु 05/08/2004	शनि 22/08/2005	बुध 21/01/2007	केतु 18/05/2008	शुक्र 30/11/2009
शनि 07/09/2004	बुध 07/11/2005	केतु 18/02/2007	शुक्र 22/08/2008	सूर्य 26/12/2009
बुध 08/10/2004	केतु 09/12/2005	शुक्र 10/05/2007	सूर्य 20/09/2008	चंद्र 07/02/2010
केतु 20/10/2004	शुक्र 11/03/2006	सूर्य 04/06/2007	चंद्र 07/11/2008	मंगल 09/03/2010
शुक्र 24/11/2004	सूर्य 07/04/2006	चंद्र 14/07/2007	मंगल 11/12/2008	राहु 26/05/2010
सूर्य 05/12/2004	चंद्र 23/05/2006	मंगल 12/08/2007	राहु 08/03/2009	गुरु 03/08/2010
चंद्र 23/12/2004	मंगल 24/06/2006	राहु 24/10/2007	गुरु 24/05/2009	शनि 24/10/2010

चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु
24/10/2010	25/05/2011	22/01/2013	24/07/2013	20/12/2013
25/05/2011	22/01/2013	24/07/2013	20/12/2013	08/01/2015
केतु 05/11/2010	शुक्र 03/09/2011	सूर्य 31/01/2013	मंगल 02/08/2013	राहु 16/02/2014
शुक्र 10/12/2010	सूर्य 03/10/2011	चंद्र 16/02/2013	राहु 24/08/2013	गुरु 08/04/2014
सूर्य 21/12/2010	चंद्र 23/11/2011	मंगल 26/02/2013	गुरु 13/09/2013	शनि 07/06/2014
चंद्र 08/01/2011	मंगल 29/12/2011	राहु 26/03/2013	शनि 07/10/2013	बुध 01/08/2014
मंगल 20/01/2011	राहु 29/03/2012	गुरु 19/04/2013	बुध 28/10/2013	केतु 23/08/2014
राहु 21/02/2011	गुरु 18/06/2012	शनि 18/05/2013	केतु 05/11/2013	शुक्र 26/10/2014
गुरु 22/03/2011	शनि 23/09/2012	बुध 13/06/2013	शुक्र 30/11/2013	सूर्य 14/11/2014
शनि 24/04/2011	बुध 18/12/2012	केतु 24/06/2013	सूर्य 08/12/2013	चंद्र 16/12/2014
बुध 25/05/2011	केतु 22/01/2013	शुक्र 24/07/2013	चंद्र 20/12/2013	मंगल 08/01/2015

मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र
08/01/2015	15/12/2015	22/01/2017	20/01/2018	18/06/2018
15/12/2015	22/01/2017	20/01/2018	18/06/2018	18/08/2019
गुरु 22/02/2015	शनि 17/02/2016	बुध 15/03/2017	केतु 28/01/2018	शुक्र 28/08/2018
शनि 17/04/2015	बुध 14/04/2016	केतु 05/04/2017	शुक्र 22/02/2018	सूर्य 18/09/2018
बुध 04/06/2015	केतु 08/05/2016	शुक्र 04/06/2017	सूर्य 02/03/2018	चंद्र 24/10/2018
केतु 24/06/2015	शुक्र 14/07/2016	सूर्य 22/06/2017	चंद्र 14/03/2018	मंगल 17/11/2018
शुक्र 20/08/2015	सूर्य 03/08/2016	चंद्र 22/07/2017	मंगल 23/03/2018	राहु 20/01/2019
सूर्य 06/09/2015	चंद्र 06/09/2016	मंगल 13/08/2017	राहु 14/04/2018	गुरु 18/03/2019
चंद्र 04/10/2015	मंगल 30/09/2016	राहु 06/10/2017	गुरु 04/05/2018	शनि 25/05/2019
मंगल 24/10/2015	राहु 29/11/2016	गुरु 23/11/2017	शनि 28/05/2018	बुध 24/07/2019
राहु 15/12/2015	गुरु 22/01/2017	शनि 20/01/2018	बुध 18/06/2018	केतु 18/08/2019



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि
18/08/2019	24/12/2019	24/07/2020	06/04/2023	29/08/2025
24/12/2019	24/07/2020	06/04/2023	29/08/2025	05/07/2028
सूर्य 24/08/2019	चंद्र 10/01/2020	राहु 19/12/2020	गुरु 01/08/2023	शनि 10/02/2026
चंद्र 04/09/2019	मंगल 23/01/2020	गुरु 29/04/2021	शनि 18/12/2023	बुध 08/07/2026
मंगल 11/09/2019	राहु 24/02/2020	शनि 02/10/2021	बुध 20/04/2024	केतु 06/09/2026
राहु 30/09/2019	गुरु 23/03/2020	बुध 19/02/2022	केतु 10/06/2024	शुक्र 27/02/2027
गुरु 18/10/2019	शनि 26/04/2020	केतु 18/04/2022	शुक्र 03/11/2024	सूर्य 20/04/2027
शनि 07/11/2019	बुध 26/05/2020	शुक्र 29/09/2022	सूर्य 17/12/2024	चंद्र 16/07/2027
बुध 25/11/2019	केतु 08/06/2020	सूर्य 17/11/2022	चंद्र 28/02/2025	मंगल 15/09/2027
केतु 02/12/2019	शुक्र 13/07/2020	चंद्र 07/02/2023	मंगल 20/04/2025	राहु 18/02/2028
शुक्र 24/12/2019	सूर्य 24/07/2020	मंगल 06/04/2023	राहु 29/08/2025	गुरु 05/07/2028

राहु - बुध	राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र
05/07/2028	23/01/2031	10/02/2032	10/02/2035	05/01/2036
23/01/2031	10/02/2032	10/02/2035	05/01/2036	06/07/2037
बुध 14/11/2028	केतु 14/02/2031	शुक्र 11/08/2032	सूर्य 27/02/2035	चंद्र 19/02/2036
केतु 08/01/2029	शुक्र 19/04/2031	सूर्य 05/10/2032	चंद्र 26/03/2035	मंगल 22/03/2036
शुक्र 12/06/2029	सूर्य 08/05/2031	चंद्र 04/01/2033	मंगल 14/04/2035	राहु 13/06/2036
सूर्य 29/07/2029	चंद्र 09/06/2031	मंगल 09/03/2033	राहु 02/06/2035	गुरु 25/08/2036
चंद्र 14/10/2029	मंगल 02/07/2031	राहु 20/08/2033	गुरु 16/07/2035	शनि 19/11/2036
मंगल 07/12/2029	राहु 28/08/2031	गुरु 13/01/2034	शनि 06/09/2035	बुध 05/02/2037
राहु 26/04/2030	गुरु 18/10/2031	शनि 06/07/2034	बुध 23/10/2035	केतु 09/03/2037
गुरु 28/08/2030	शनि 18/12/2031	बुध 08/12/2034	केतु 11/11/2035	शुक्र 08/06/2037
शनि 23/01/2031	बुध 10/02/2032	केतु 10/02/2035	शुक्र 05/01/2036	सूर्य 06/07/2037

राहु - मंगल	गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु
06/07/2037	24/07/2038	10/09/2040	25/03/2043	30/06/2045
24/07/2038	10/09/2040	25/03/2043	30/06/2045	06/06/2046
मंगल 28/07/2037	गुरु 05/11/2038	शनि 04/02/2041	बुध 20/07/2043	केतु 19/07/2045
राहु 24/09/2037	शनि 08/03/2039	बुध 15/06/2041	केतु 06/09/2043	शुक्र 14/09/2045
गुरु 14/11/2037	बुध 27/06/2039	केतु 08/08/2041	शुक्र 22/01/2044	सूर्य 01/10/2045
शनि 13/01/2038	केतु 11/08/2039	शुक्र 09/01/2042	सूर्य 04/03/2044	चंद्र 30/10/2045
बुध 09/03/2038	शुक्र 19/12/2039	सूर्य 24/02/2042	चंद्र 12/05/2044	मंगल 19/11/2045
केतु 31/03/2038	सूर्य 27/01/2040	चंद्र 13/05/2042	मंगल 29/06/2044	राहु 09/01/2046
शुक्र 03/06/2038	चंद्र 01/04/2040	मंगल 06/07/2042	राहु 31/10/2044	गुरु 23/02/2046
सूर्य 22/06/2038	मंगल 17/05/2040	राहु 21/11/2042	गुरु 19/02/2045	शनि 18/04/2046
चंद्र 24/07/2038	राहु 10/09/2040	गुरु 25/03/2043	शनि 30/06/2045	बुध 06/06/2046



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु
06/06/2046	04/02/2049	23/11/2049	25/03/2051	29/02/2052
04/02/2049	23/11/2049	25/03/2051	29/02/2052	24/07/2054
शुक्र 15/11/2046	सूर्य 18/02/2049	चंद्र 02/01/2050	मंगल 14/04/2051	राहु 09/07/2052
सूर्य 03/01/2047	चंद्र 14/03/2049	मंगल 31/01/2050	राहु 04/06/2051	गुरु 03/11/2052
चंद्र 25/03/2047	मंगल 01/04/2049	राहु 14/04/2050	गुरु 19/07/2051	शनि 22/03/2053
मंगल 21/05/2047	राहु 14/05/2049	गुरु 18/06/2050	शनि 11/09/2051	बुध 24/07/2053
राहु 14/10/2047	गुरु 22/06/2049	शनि 03/09/2050	बुध 29/10/2051	केतु 13/09/2053
गुरु 20/02/2048	शनि 08/08/2049	बुध 11/11/2050	केतु 18/11/2051	शुक्र 06/02/2054
शनि 24/07/2048	बुध 18/09/2049	केतु 09/12/2050	शुक्र 14/01/2052	सूर्य 22/03/2054
बुध 09/12/2048	केतु 05/10/2049	शुक्र 28/02/2051	सूर्य 31/01/2052	चंद्र 03/06/2054
केतु 04/02/2049	शुक्र 23/11/2049	सूर्य 25/03/2051	चंद्र 29/02/2052	मंगल 24/07/2054

शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य
24/07/2054	27/07/2057	05/04/2060	15/05/2061	15/07/2064
27/07/2057	05/04/2060	15/05/2061	15/07/2064	27/06/2065
शनि 14/01/2055	बुध 13/12/2057	केतु 29/04/2060	शुक्र 24/11/2061	सूर्य 01/08/2064
बुध 19/06/2055	केतु 09/02/2058	शुक्र 05/07/2060	सूर्य 21/01/2062	चंद्र 30/08/2064
केतु 22/08/2055	शुक्र 22/07/2058	सूर्य 25/07/2060	चंद्र 27/04/2062	मंगल 19/09/2064
शुक्र 21/02/2056	सूर्य 10/09/2058	चंद्र 28/08/2060	मंगल 03/07/2062	राहु 10/11/2064
सूर्य 16/04/2056	चंद्र 01/12/2058	मंगल 21/09/2060	राहु 24/12/2062	गुरु 26/12/2064
चंद्र 17/07/2056	मंगल 27/01/2059	राहु 21/11/2060	गुरु 27/05/2063	शनि 19/02/2065
मंगल 19/09/2056	राहु 23/06/2059	गुरु 14/01/2061	शनि 26/11/2063	बुध 09/04/2065
राहु 02/03/2057	गुरु 01/11/2059	शनि 19/03/2061	बुध 08/05/2064	केतु 30/04/2065
गुरु 27/07/2057	शनि 05/04/2060	बुध 15/05/2061	केतु 15/07/2064	शुक्र 27/06/2065

शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध
27/06/2065	26/01/2067	06/03/2068	11/01/2071	24/07/2073
26/01/2067	06/03/2068	11/01/2071	24/07/2073	21/12/2075
चंद्र 14/08/2065	मंगल 18/02/2067	राहु 09/08/2068	गुरु 14/05/2071	बुध 26/11/2073
मंगल 16/09/2065	राहु 20/04/2067	गुरु 26/12/2068	शनि 08/10/2071	केतु 16/01/2074
राहु 12/12/2065	गुरु 13/06/2067	शनि 08/06/2069	बुध 16/02/2072	शुक्र 11/06/2074
गुरु 27/02/2066	शनि 16/08/2067	बुध 03/11/2069	केतु 10/04/2072	सूर्य 25/07/2074
शनि 30/05/2066	बुध 13/10/2067	केतु 03/01/2070	शुक्र 11/09/2072	चंद्र 07/10/2074
बुध 20/08/2066	केतु 05/11/2067	शुक्र 25/06/2070	सूर्य 27/10/2072	मंगल 27/11/2074
केतु 23/09/2066	शुक्र 12/01/2068	सूर्य 16/08/2070	चंद्र 12/01/2073	राहु 08/04/2075
शुक्र 28/12/2066	सूर्य 01/02/2068	चंद्र 11/11/2070	मंगल 07/03/2073	गुरु 03/08/2075
सूर्य 26/01/2067	चंद्र 06/03/2068	मंगल 11/01/2071	राहु 24/07/2073	शनि 21/12/2075



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल
21/12/2075	17/12/2076	18/10/2079	23/08/2080	23/01/2082
17/12/2076	18/10/2079	23/08/2080	23/01/2082	20/01/2083
केतु 11/01/2076	शुक्र 07/06/2077	सूर्य 02/11/2079	चंद्र 05/10/2080	मंगल 13/02/2082
शुक्र 11/03/2076	सूर्य 29/07/2077	चंद्र 28/11/2079	मंगल 04/11/2080	राहु 08/04/2082
सूर्य 29/03/2076	चंद्र 23/10/2077	मंगल 16/12/2079	राहु 21/01/2081	गुरु 26/05/2082
चंद्र 28/04/2076	मंगल 23/12/2077	राहु 01/02/2080	गुरु 31/03/2081	शनि 23/07/2082
मंगल 20/05/2076	राहु 27/05/2078	गुरु 13/03/2080	शनि 21/06/2081	बुध 12/09/2082
राहु 13/07/2076	गुरु 12/10/2078	शनि 01/05/2080	बुध 02/09/2081	केतु 03/10/2082
गुरु 30/08/2076	शनि 25/03/2079	बुध 14/06/2080	केतु 02/10/2081	शुक्र 02/12/2082
शनि 26/10/2076	बुध 18/08/2079	केतु 02/07/2080	शुक्र 28/12/2081	सूर्य 21/12/2082
बुध 17/12/2076	केतु 18/10/2079	शुक्र 23/08/2080	सूर्य 23/01/2082	चंद्र 20/01/2083

बुध - राहु	बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र
20/01/2083	08/08/2085	14/11/2087	24/07/2090	20/12/2090
08/08/2085	14/11/2087	24/07/2090	20/12/2090	19/02/2092
राहु 08/06/2083	गुरु 27/11/2085	शनि 18/04/2088	केतु 02/08/2090	शुक्र 01/03/2091
गुरु 11/10/2083	शनि 07/04/2086	बुध 04/09/2088	शुक्र 27/08/2090	सूर्य 23/03/2091
शनि 06/03/2084	बुध 02/08/2086	केतु 31/10/2088	सूर्य 03/09/2090	चंद्र 27/04/2091
बुध 16/07/2084	केतु 19/09/2086	शुक्र 13/04/2089	चंद्र 16/09/2090	मंगल 22/05/2091
केतु 08/09/2084	शुक्र 04/02/2087	सूर्य 01/06/2089	मंगल 24/09/2090	राहु 25/07/2091
शुक्र 11/02/2085	सूर्य 18/03/2087	चंद्र 22/08/2089	राहु 17/10/2090	गुरु 20/09/2091
सूर्य 29/03/2085	चंद्र 26/05/2087	मंगल 19/10/2089	गुरु 06/11/2090	शनि 26/11/2091
चंद्र 15/06/2085	मंगल 13/07/2087	राहु 15/03/2090	शनि 29/11/2090	बुध 26/01/2092
मंगल 08/08/2085	राहु 14/11/2087	गुरु 24/07/2090	बुध 20/12/2090	केतु 19/02/2092

केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु
19/02/2092	26/06/2092	25/01/2093	24/06/2093	12/07/2094
26/06/2092	25/01/2093	24/06/2093	12/07/2094	18/06/2095
सूर्य 26/02/2092	चंद्र 14/07/2092	मंगल 03/02/2093	राहु 20/08/2093	गुरु 26/08/2094
चंद्र 08/03/2092	मंगल 26/07/2092	राहु 25/02/2093	गुरु 10/10/2093	शनि 19/10/2094
मंगल 15/03/2092	राहु 27/08/2092	गुरु 17/03/2093	शनि 10/12/2093	बुध 07/12/2094
राहु 03/04/2092	गुरु 25/09/2092	शनि 10/04/2093	बुध 02/02/2094	केतु 27/12/2094
गुरु 20/04/2092	शनि 29/10/2092	बुध 01/05/2093	केतु 25/02/2094	शुक्र 21/02/2095
शनि 10/05/2092	बुध 28/11/2092	केतु 10/05/2093	शुक्र 30/04/2094	सूर्य 11/03/2095
बुध 29/05/2092	केतु 10/12/2092	शुक्र 04/06/2093	सूर्य 19/05/2094	चंद्र 08/04/2095
केतु 05/06/2092	शुक्र 15/01/2093	सूर्य 11/06/2093	चंद्र 20/06/2094	मंगल 28/04/2095
शुक्र 26/06/2092	सूर्य 25/01/2093	चंद्र 24/06/2093	मंगल 12/07/2094	राहु 18/06/2095



विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - गुरु - शुक्र		राहु - गुरु - सूर्य		राहु - गुरु - चंद्र		राहु - गुरु - मंगल	
10/06/2024 09:04		03/11/2024 11:28		17/12/2024 07:23		28/02/2025 08:35	
03/11/2024 11:28		17/12/2024 07:23		28/02/2025 08:35		20/04/2025 11:49	
शुक्र	04/07/2024 17:28	सूर्य	05/11/2024 16:03	चंद्र	23/12/2024 09:29	मंगल	03/03/2025 08:10
सूर्य	12/07/2024 00:47	चंद्र	09/11/2024 07:43	मंगल	27/12/2024 15:45	राहु	11/03/2025 00:15
चंद्र	24/07/2024 04:59	मंगल	11/11/2024 21:05	राहु	07/01/2025 14:44	गुरु	17/03/2025 19:53
मंगल	01/08/2024 17:31	राहु	18/11/2024 10:52	गुरु	17/01/2025 08:29	शनि	25/03/2025 22:12
राहु	23/08/2024 15:29	गुरु	24/11/2024 07:07	शनि	28/01/2025 22:05	बुध	02/04/2025 04:03
गुरु	12/09/2024 03:00	शनि	01/12/2024 05:40	बुध	08/02/2025 06:27	केतु	05/04/2025 03:39
शनि	05/10/2024 06:11	बुध	07/12/2024 10:42	केतु	12/02/2025 12:43	शुक्र	13/04/2025 16:11
बुध	25/10/2024 22:55	केतु	10/12/2024 00:04	शुक्र	24/02/2025 16:55	सूर्य	16/04/2025 05:33
केतु	03/11/2024 11:28	शुक्र	17/12/2024 07:23	सूर्य	28/02/2025 08:35	चंद्र	20/04/2025 11:49

राहु - गुरु - राहु		राहु - शनि - शनि		राहु - शनि - बुध		राहु - शनि - केतु	
20/04/2025 11:49		29/08/2025 23:35		10/02/2026 19:14		08/07/2026 06:31	
29/08/2025 23:35		10/02/2026 19:14		08/07/2026 06:31		06/09/2026 23:51	
राहु	10/05/2025 05:11	शनि	25/09/2025 01:53	बुध	03/03/2026 16:38	केतु	11/07/2026 19:31
गुरु	27/05/2025 17:57	बुध	18/10/2025 10:17	केतु	12/03/2026 07:05	शुक्र	21/07/2026 22:25
शनि	17/06/2025 13:37	केतु	28/10/2025 01:01	शुक्र	05/04/2026 20:58	सूर्य	24/07/2026 23:17
बुध	06/07/2025 04:41	शुक्र	24/11/2025 12:18	सूर्य	13/04/2026 05:56	चंद्र	30/07/2026 00:44
केतु	13/07/2025 20:46	सूर्य	02/12/2025 18:05	चंद्र	25/04/2026 12:52	मंगल	02/08/2026 13:44
शुक्र	04/08/2025 18:43	चंद्र	16/12/2025 11:43	मंगल	04/05/2026 03:20	राहु	11/08/2026 16:20
सूर्य	11/08/2025 08:31	मंगल	26/12/2025 02:28	राहु	26/05/2026 06:13	गुरु	19/08/2026 18:39
चंद्र	22/08/2025 07:30	राहु	19/01/2026 19:49	गुरु	14/06/2026 22:07	शनि	29/08/2026 09:24
मंगल	29/08/2025 23:35	गुरु	10/02/2026 19:14	शनि	08/07/2026 06:31	बुध	06/09/2026 23:51

राहु - शनि - शुक्र		राहु - शनि - सूर्य		राहु - शनि - चंद्र		राहु - शनि - मंगल	
06/09/2026 23:51		27/02/2027 11:42		20/04/2027 12:52		16/07/2027 06:47	
27/02/2027 11:42		20/04/2027 12:52		16/07/2027 06:47		15/09/2027 00:08	
शुक्र	05/10/2026 21:50	सूर्य	02/03/2027 02:10	चंद्र	27/04/2027 18:21	मंगल	19/07/2027 19:48
सूर्य	14/10/2026 14:01	चंद्र	06/03/2027 10:16	मंगल	02/05/2027 19:48	राहु	28/07/2027 22:24
चंद्र	29/10/2026 01:01	मंगल	09/03/2027 11:08	राहु	15/05/2027 20:05	गुरु	06/08/2027 00:43
मंगल	08/11/2026 03:54	राहु	17/03/2027 06:30	गुरु	27/05/2027 09:41	शनि	15/08/2027 15:28
राहु	04/12/2026 04:29	गुरु	24/03/2027 05:03	शनि	10/06/2027 03:19	बुध	24/08/2027 05:55
गुरु	27/12/2026 07:40	शनि	01/04/2027 10:50	बुध	22/06/2027 10:15	केतु	27/08/2027 18:56
शनि	23/01/2027 18:56	बुध	08/04/2027 19:48	केतु	27/06/2027 11:42	शुक्र	06/09/2027 21:49
बुध	17/02/2027 08:49	केतु	11/04/2027 20:40	शुक्र	11/07/2027 22:41	सूर्य	09/09/2027 22:41
केतु	27/02/2027 11:42	शुक्र	20/04/2027 12:52	सूर्य	16/07/2027 06:47	चंद्र	15/09/2027 00:08



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शनि - राहु		राहु - शनि - गुरु		राहु - बुध - बुध		राहु - बुध - केतु	
15/09/2027 00:08	18/02/2028 03:36	18/02/2028 03:36	05/07/2028 22:41	05/07/2028 22:41	14/11/2028 21:24	05/07/2028 22:41	14/11/2028 21:24
18/02/2028 03:36	05/07/2028 22:41	05/07/2028 22:41	14/11/2028 21:24	14/11/2028 21:24	08/01/2029 05:20	14/11/2028 21:24	08/01/2029 05:20
राहु	08/10/2027 10:15	गुरु	07/03/2028 15:45	बुध	24/07/2028 15:18	केतु	18/11/2028 01:28
गुरु	29/10/2027 05:55	शनि	29/03/2028 15:10	केतु	01/08/2028 08:01	शुक्र	27/11/2028 02:47
शनि	22/11/2027 23:16	बुध	18/04/2028 07:04	शुक्र	23/08/2028 07:49	सूर्य	29/11/2028 19:59
बुध	15/12/2027 02:09	केतु	26/04/2028 09:23	सूर्य	29/08/2028 22:09	चंद्र	04/12/2028 08:39
केतु	24/12/2027 04:45	शुक्र	19/05/2028 12:34	चंद्र	09/09/2028 22:02	मंगल	07/12/2028 12:42
शुक्र	19/01/2028 05:20	सूर्य	26/05/2028 11:07	मंगल	17/09/2028 14:46	राहु	15/12/2028 16:18
सूर्य	27/01/2028 00:42	चंद्र	07/06/2028 00:42	राहु	07/10/2028 09:46	गुरु	22/12/2028 22:09
चंद्र	09/02/2028 01:00	मंगल	15/06/2028 03:01	गुरु	24/10/2028 24:00	शनि	31/12/2028 12:37
मंगल	18/02/2028 03:36	राहु	05/07/2028 22:41	शनि	14/11/2028 21:24	बुध	08/01/2029 05:20

राहु - बुध - शुक्र		राहु - बुध - सूर्य		राहु - बुध - चंद्र		राहु - बुध - मंगल	
08/01/2029 05:20	12/06/2029 10:53	12/06/2029 10:53	29/07/2029 00:33	29/07/2029 00:33	14/10/2029 15:20	29/07/2029 00:33	14/10/2029 15:20
12/06/2029 10:53	29/07/2029 00:33	29/07/2029 00:33	14/10/2029 15:20	14/10/2029 15:20	07/12/2029 23:16	14/10/2029 15:20	07/12/2029 23:16
शुक्र	03/02/2029 02:16	सूर्य	14/06/2029 18:46	चंद्र	04/08/2029 11:47	मंगल	17/10/2029 19:24
सूर्य	10/02/2029 20:32	चंद्र	18/06/2029 15:55	मंगल	09/08/2029 00:27	राहु	25/10/2029 22:59
चंद्र	23/02/2029 19:00	मंगल	21/06/2029 09:06	राहु	20/08/2029 15:52	गुरु	02/11/2029 04:51
मंगल	04/03/2029 20:20	राहु	28/06/2029 08:45	गुरु	31/08/2029 00:14	शनि	10/11/2029 19:18
राहु	28/03/2029 03:10	गुरु	04/07/2029 13:47	शनि	12/09/2029 07:10	बुध	18/11/2029 12:02
गुरु	17/04/2029 19:54	शनि	11/07/2029 22:45	बुध	23/09/2029 07:04	केतु	21/11/2029 16:05
शनि	12/05/2029 09:47	बुध	18/07/2029 13:05	केतु	27/09/2029 19:44	शुक्र	30/11/2029 17:25
बुध	03/06/2029 09:34	केतु	21/07/2029 06:17	शुक्र	10/10/2029 18:11	सूर्य	03/12/2029 10:37
केतु	12/06/2029 10:53	शुक्र	29/07/2029 00:33	सूर्य	14/10/2029 15:20	चंद्र	07/12/2029 23:16

राहु - बुध - राहु		राहु - बुध - गुरु		राहु - बुध - शनि		राहु - केतु - केतु	
07/12/2029 23:16	26/04/2030 16:16	26/04/2030 16:16	28/08/2030 20:42	28/08/2030 20:42	23/01/2031 07:59	28/08/2030 20:42	23/01/2031 07:59
26/04/2030 16:16	28/08/2030 20:42	28/08/2030 20:42	23/01/2031 07:59	23/01/2031 07:59	14/02/2031 16:54	23/01/2031 07:59	14/02/2031 16:54
राहु	28/12/2029 22:13	गुरु	13/05/2030 05:40	शनि	21/09/2030 05:05	केतु	24/01/2031 15:18
गुरु	16/01/2030 13:17	शनि	01/06/2030 21:34	बुध	12/10/2030 02:29	शुक्र	28/01/2031 08:47
शनि	07/02/2030 16:11	बुध	19/06/2030 11:47	केतु	20/10/2030 16:57	सूर्य	29/01/2031 11:38
बुध	27/02/2030 11:11	केतु	26/06/2030 17:39	शुक्र	14/11/2030 06:49	चंद्र	31/01/2031 08:22
केतु	07/03/2030 14:47	शुक्र	17/07/2030 10:23	सूर्य	21/11/2030 15:47	मंगल	01/02/2031 15:42
शुक्र	30/03/2030 21:37	सूर्य	23/07/2030 15:25	चंद्र	03/12/2030 22:44	राहु	05/02/2031 00:14
सूर्य	06/04/2030 21:16	चंद्र	02/08/2030 23:47	मंगल	12/12/2030 13:11	गुरु	07/02/2031 23:49
चंद्र	18/04/2030 12:41	मंगल	10/08/2030 05:38	राहु	03/01/2031 16:05	शनि	11/02/2031 12:50
मंगल	26/04/2030 16:16	राहु	28/08/2030 20:42	गुरु	23/01/2031 07:59	बुध	14/02/2031 16:54



विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - केतु - शुक्र		राहु - केतु - सूर्य		राहु - केतु - चंद्र		राहु - केतु - मंगल	
14/02/2031 16:54		19/04/2031 14:57		08/05/2031 19:10		09/06/2031 18:11	
19/04/2031 14:57		08/05/2031 19:10		09/06/2031 18:11		02/07/2031 03:06	
शुक्र	25/02/2031 08:34	सूर्य	20/04/2031 13:57	चंद्र	11/05/2031 11:05	मंगल	11/06/2031 01:30
सूर्य	28/02/2031 13:16	चंद्र	22/04/2031 04:19	मंगल	13/05/2031 07:49	राहु	14/06/2031 10:03
चंद्र	05/03/2031 21:07	मंगल	23/04/2031 07:09	राहु	18/05/2031 02:53	गुरु	17/06/2031 09:38
मंगल	09/03/2031 14:36	राहु	26/04/2031 04:11	गुरु	22/05/2031 09:09	शनि	20/06/2031 22:39
राहु	19/03/2031 04:42	गुरु	28/04/2031 17:33	शनि	27/05/2031 10:36	बुध	24/06/2031 02:43
गुरु	27/03/2031 17:15	शनि	01/05/2031 18:25	बुध	31/05/2031 23:15	केतु	25/06/2031 10:02
शनि	06/04/2031 20:08	बुध	04/05/2031 11:37	केतु	02/06/2031 20:00	शुक्र	29/06/2031 03:31
बुध	15/04/2031 21:28	केतु	05/05/2031 14:28	शुक्र	08/06/2031 03:50	सूर्य	30/06/2031 06:22
केतु	19/04/2031 14:57	शुक्र	08/05/2031 19:10	सूर्य	09/06/2031 18:11	चंद्र	02/07/2031 03:06

राहु - केतु - राहु		राहु - केतु - गुरु		राहु - केतु - शनि		राहु - केतु - बुध	
02/07/2031 03:06		28/08/2031 15:45		18/10/2031 18:59		18/12/2031 12:20	
28/08/2031 15:45		18/10/2031 18:59		18/12/2031 12:20		10/02/2032 20:17	
राहु	10/07/2031 18:12	गुरु	04/09/2031 11:23	शनि	28/10/2031 09:44	बुध	26/12/2031 05:04
गुरु	18/07/2031 10:17	शनि	12/09/2031 13:42	बुध	06/11/2031 00:12	केतु	29/12/2031 09:07
शनि	27/07/2031 12:53	बुध	19/09/2031 19:33	केतु	09/11/2031 13:12	शुक्र	07/01/2032 10:27
बुध	04/08/2031 16:29	केतु	22/09/2031 19:09	शुक्र	19/11/2031 16:06	सूर्य	10/01/2032 03:39
केतु	08/08/2031 01:01	शुक्र	01/10/2031 07:41	सूर्य	22/11/2031 16:58	चंद्र	14/01/2032 16:18
शुक्र	17/08/2031 15:08	सूर्य	03/10/2031 21:03	चंद्र	27/11/2031 18:25	मंगल	17/01/2032 20:22
सूर्य	20/08/2031 12:09	चंद्र	08/10/2031 03:19	मंगल	01/12/2031 07:25	राहु	25/01/2032 23:58
चंद्र	25/08/2031 07:13	मंगल	11/10/2031 02:54	राहु	10/12/2031 10:01	गुरु	02/02/2032 05:49
मंगल	28/08/2031 15:45	राहु	18/10/2031 18:59	गुरु	18/12/2031 12:20	शनि	10/02/2032 20:17

राहु - शुक्र - शुक्र		राहु - शुक्र - सूर्य		राहु - शुक्र - चंद्र		राहु - शुक्र - मंगल	
10/02/2032 20:17		11/08/2032 11:17		05/10/2032 06:11		04/01/2033 13:41	
11/08/2032 11:17		05/10/2032 06:11		04/01/2033 13:41		09/03/2033 11:44	
शुक्र	12/03/2032 06:47	सूर्य	14/08/2032 05:01	चंद्र	12/10/2032 20:48	मंगल	08/01/2033 07:10
सूर्य	21/03/2032 09:56	चंद्र	18/08/2032 18:36	मंगल	18/10/2032 04:38	राहु	17/01/2033 21:16
चंद्र	05/04/2032 15:11	मंगल	21/08/2032 23:18	राहु	31/10/2032 21:22	गुरु	26/01/2033 09:49
मंगल	16/04/2032 06:51	राहु	30/08/2032 04:32	गुरु	13/11/2032 01:34	शनि	05/02/2033 12:42
राहु	13/05/2032 16:18	गुरु	06/09/2032 11:51	शनि	27/11/2032 12:33	बुध	14/02/2033 14:02
गुरु	07/06/2032 00:42	शनि	15/09/2032 04:03	बुध	10/12/2032 11:01	केतु	18/02/2033 07:31
शनि	05/07/2032 22:41	बुध	22/09/2032 22:20	केतु	15/12/2032 18:51	शुक्र	28/02/2033 23:11
बुध	31/07/2032 19:36	केतु	26/09/2032 03:02	शुक्र	31/12/2032 00:06	सूर्य	04/03/2033 03:53
केतु	11/08/2032 11:17	शुक्र	05/10/2032 06:11	सूर्य	04/01/2033 13:41	चंद्र	09/03/2033 11:44



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शुक्र - राहु		राहु - शुक्र - गुरु		राहु - शुक्र - शनि		राहु - शुक्र - बुध	
09/03/2033 11:44		20/08/2033 20:26		13/01/2034 22:50		06/07/2034 10:41	
20/08/2033 20:26		13/01/2034 22:50		06/07/2034 10:41		08/12/2034 16:14	
राहु	03/04/2033 03:26	गुरु	09/09/2033 07:57	शनि	10/02/2034 10:06	बुध	28/07/2034 10:28
गुरु	25/04/2033 01:24	शनि	02/10/2033 11:08	बुध	06/03/2034 23:59	केतु	06/08/2034 11:47
शनि	21/05/2033 01:58	बुध	23/10/2033 03:52	केतु	17/03/2034 02:53	शुक्र	01/09/2034 08:43
बुध	13/06/2033 08:48	केतु	31/10/2033 16:25	शुक्र	15/04/2034 00:51	सूर्य	09/09/2034 02:59
केतु	22/06/2033 22:55	शुक्र	25/11/2033 00:49	सूर्य	23/04/2034 17:03	चंद्र	22/09/2034 01:27
शुक्र	20/07/2033 08:22	सूर्य	02/12/2033 08:08	चंद्र	08/05/2034 04:02	मंगल	01/10/2034 02:47
सूर्य	28/07/2033 13:36	चंद्र	14/12/2033 12:20	मंगल	18/05/2034 06:55	राहु	24/10/2034 09:37
चंद्र	11/08/2033 06:19	मंगल	23/12/2033 00:52	राहु	13/06/2034 07:30	गुरु	14/11/2034 02:21
मंगल	20/08/2033 20:26	राहु	13/01/2034 22:50	गुरु	06/07/2034 10:41	शनि	08/12/2034 16:14

राहु - शुक्र - केतु		राहु - सूर्य - सूर्य		राहु - सूर्य - चंद्र		राहु - सूर्य - मंगल	
08/12/2034 16:14		10/02/2035 14:17		27/02/2035 00:45		26/03/2035 10:12	
10/02/2035 14:17		27/02/2035 00:45		26/03/2035 10:12		14/04/2035 14:25	
केतु	12/12/2034 09:43	सूर्य	11/02/2035 10:00	चंद्र	01/03/2035 07:32	मंगल	27/03/2035 13:03
शुक्र	23/12/2034 01:23	चंद्र	12/02/2035 18:52	मंगल	02/03/2035 21:53	राहु	30/03/2035 10:05
सूर्य	26/12/2034 06:06	मंगल	13/02/2035 17:53	राहु	07/03/2035 00:30	गुरु	01/04/2035 23:26
चंद्र	31/12/2034 13:56	राहु	16/02/2035 05:03	गुरु	10/03/2035 16:10	शनि	05/04/2035 00:18
मंगल	04/01/2035 07:25	गुरु	18/02/2035 09:39	शनि	15/03/2035 00:16	बुध	07/04/2035 17:30
राहु	13/01/2035 21:31	शनि	21/02/2035 00:07	बुध	18/03/2035 21:24	केतु	08/04/2035 20:21
गुरु	22/01/2035 10:04	बुध	23/02/2035 08:00	केतु	20/03/2035 11:45	शुक्र	12/04/2035 01:03
शनि	01/02/2035 12:57	केतु	24/02/2035 07:00	शुक्र	25/03/2035 01:20	सूर्य	13/04/2035 00:04
बुध	10/02/2035 14:17	शुक्र	27/02/2035 00:45	सूर्य	26/03/2035 10:12	चंद्र	14/04/2035 14:25

राहु - सूर्य - राहु		राहु - सूर्य - गुरु		राहु - सूर्य - शनि		राहु - सूर्य - बुध	
14/04/2035 14:25		02/06/2035 21:49		16/07/2035 17:45		06/09/2035 18:54	
02/06/2035 21:49		16/07/2035 17:45		06/09/2035 18:54		23/10/2035 08:34	
राहु	21/04/2035 23:56	गुरु	08/06/2035 18:05	शनि	24/07/2035 23:32	बुध	13/09/2035 09:14
गुरु	28/04/2035 13:43	शनि	15/06/2035 16:38	बुध	01/08/2035 08:29	केतु	16/09/2035 02:26
शनि	06/05/2035 09:05	बुध	21/06/2035 21:39	केतु	04/08/2035 09:21	शुक्र	23/09/2035 20:43
बुध	13/05/2035 08:44	केतु	24/06/2035 11:01	शुक्र	13/08/2035 01:33	सूर्य	26/09/2035 04:36
केतु	16/05/2035 05:46	शुक्र	01/07/2035 18:20	सूर्य	15/08/2035 16:00	चंद्र	30/09/2035 01:44
शुक्र	24/05/2035 11:00	सूर्य	03/07/2035 22:56	चंद्र	20/08/2035 00:06	मंगल	02/10/2035 18:56
सूर्य	26/05/2035 22:10	चंद्र	07/07/2035 14:36	मंगल	23/08/2035 00:58	राहु	09/10/2035 18:35
चंद्र	31/05/2035 00:48	मंगल	10/07/2035 03:57	राहु	30/08/2035 20:21	गुरु	15/10/2035 23:36
मंगल	02/06/2035 21:49	राहु	16/07/2035 17:45	गुरु	06/09/2035 18:54	शनि	23/10/2035 08:34



विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - गुरु - शुक्र - शुक्र		राहु - गुरु - शुक्र - सूर्य		राहु - गुरु - शुक्र - चंद्र		राहु - गुरु - शुक्र - मंगल	
10/06/2024 09:04		04/07/2024 17:28		12/07/2024 00:47		24/07/2024 04:59	
04/07/2024 17:28		12/07/2024 00:47		24/07/2024 04:59		01/08/2024 17:31	
शुक्र	14/06/2024 10:28	सूर्य	05/07/2024 02:13	चंद्र	13/07/2024 01:08	मंगल	24/07/2024 16:55
सूर्य	15/06/2024 15:41	चंद्र	05/07/2024 16:50	मंगल	13/07/2024 18:10	राहु	25/07/2024 23:35
चंद्र	17/06/2024 16:23	मंगल	06/07/2024 03:04	राहु	15/07/2024 14:00	गुरु	27/07/2024 02:52
मंगल	19/06/2024 02:28	राहु	07/07/2024 05:22	गुरु	17/07/2024 04:58	शनि	28/07/2024 11:15
राहु	22/06/2024 18:08	गुरु	08/07/2024 04:44	शनि	19/07/2024 03:14	बुध	29/07/2024 16:14
गुरु	26/06/2024 00:03	शनि	09/07/2024 08:30	बुध	20/07/2024 20:37	केतु	30/07/2024 04:09
शनि	29/06/2024 20:35	बुध	10/07/2024 09:20	केतु	21/07/2024 13:40	शुक्र	31/07/2024 14:15
बुध	03/07/2024 07:22	केतु	10/07/2024 19:34	शुक्र	23/07/2024 14:22	सूर्य	01/08/2024 00:28
केतु	04/07/2024 17:28	शुक्र	12/07/2024 00:47	सूर्य	24/07/2024 04:59	चंद्र	01/08/2024 17:31
राहु - गुरु - शुक्र - राहु		राहु - गुरु - शुक्र - गुरु		राहु - गुरु - शुक्र - शनि		राहु - गुरु - शुक्र - बुध	
01/08/2024 17:31		23/08/2024 15:29		12/09/2024 03:00		05/10/2024 06:11	
23/08/2024 15:29		12/09/2024 03:00		05/10/2024 06:11		25/10/2024 22:55	
राहु	05/08/2024 00:25	गुरु	26/08/2024 05:49	शनि	15/09/2024 18:54	बुध	08/10/2024 04:33
गुरु	07/08/2024 22:32	शनि	29/08/2024 07:50	बुध	19/09/2024 01:33	केतु	09/10/2024 09:32
शनि	11/08/2024 09:49	बुध	01/09/2024 02:04	केतु	20/09/2024 09:56	शुक्र	12/10/2024 20:19
बुध	14/08/2024 12:20	केतु	02/09/2024 05:21	शुक्र	24/09/2024 06:28	सूर्य	13/10/2024 21:09
केतु	15/08/2024 19:01	शुक्र	05/09/2024 11:16	सूर्य	25/09/2024 10:14	चंद्र	15/10/2024 14:33
शुक्र	19/08/2024 10:40	सूर्य	06/09/2024 10:38	चंद्र	27/09/2024 08:30	मंगल	16/10/2024 19:32
सूर्य	20/08/2024 12:58	चंद्र	08/09/2024 01:36	मंगल	28/09/2024 16:53	राहु	19/10/2024 22:02
चंद्र	22/08/2024 08:48	मंगल	09/09/2024 04:52	राहु	02/10/2024 04:09	गुरु	22/10/2024 16:16
मंगल	23/08/2024 15:29	राहु	12/09/2024 03:00	गुरु	05/10/2024 06:11	शनि	25/10/2024 22:55
राहु - गुरु - शुक्र - केतु		राहु - गुरु - सूर्य - सूर्य		राहु - गुरु - सूर्य - चंद्र		राहु - गुरु - सूर्य - मंगल	
25/10/2024 22:55		03/11/2024 11:28		05/11/2024 16:03		09/11/2024 07:43	
03/11/2024 11:28		05/11/2024 16:03		09/11/2024 07:43		11/11/2024 21:05	
केतु	26/10/2024 10:51	सूर्य	03/11/2024 14:05	चंद्र	05/11/2024 23:22	मंगल	09/11/2024 11:18
शुक्र	27/10/2024 20:56	चंद्र	03/11/2024 18:28	मंगल	06/11/2024 04:28	राहु	09/11/2024 20:30
सूर्य	28/10/2024 07:10	मंगल	03/11/2024 21:32	राहु	06/11/2024 17:37	गुरु	10/11/2024 04:41
चंद्र	29/10/2024 00:13	राहु	04/11/2024 05:26	गुरु	07/11/2024 05:19	शनि	10/11/2024 14:24
मंगल	29/10/2024 12:09	गुरु	04/11/2024 12:27	शनि	07/11/2024 19:11	बुध	10/11/2024 23:05
राहु	30/10/2024 18:49	शनि	04/11/2024 20:46	बुध	08/11/2024 07:37	केतु	11/11/2024 02:40
गुरु	31/10/2024 22:06	बुध	05/11/2024 04:13	केतु	08/11/2024 12:43	शुक्र	11/11/2024 12:54
शनि	02/11/2024 06:29	केतु	05/11/2024 07:17	शुक्र	09/11/2024 03:20	सूर्य	11/11/2024 15:58
बुध	03/11/2024 11:28	शुक्र	05/11/2024 16:03	सूर्य	09/11/2024 07:43	चंद्र	11/11/2024 21:05



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - गुरु - सूर्य - राहु		राहु - गुरु - सूर्य - गुरु		राहु - गुरु - सूर्य - शनि		राहु - गुरु - सूर्य - बुध	
11/11/2024 21:05		18/11/2024 10:52		24/11/2024 07:07		01/12/2024 05:40	
18/11/2024 10:52		24/11/2024 07:07		01/12/2024 05:40		07/12/2024 10:42	
राहु	12/11/2024 20:45	गुरु	19/11/2024 05:34	शनि	25/11/2024 09:30	बुध	02/12/2024 02:47
गुरु	13/11/2024 17:47	शनि	20/11/2024 03:46	बुध	26/11/2024 09:05	केतु	02/12/2024 11:29
शनि	14/11/2024 18:46	बुध	20/11/2024 23:39	केतु	26/11/2024 18:48	शुक्र	03/12/2024 12:19
बुध	15/11/2024 17:07	केतु	21/11/2024 07:49	शुक्र	27/11/2024 22:34	सूर्य	03/12/2024 19:46
केतु	16/11/2024 02:19	शुक्र	22/11/2024 07:12	सूर्य	28/11/2024 06:53	चंद्र	04/12/2024 08:11
शुक्र	17/11/2024 04:37	सूर्य	22/11/2024 14:13	चंद्र	28/11/2024 20:46	मंगल	04/12/2024 16:53
सूर्य	17/11/2024 12:31	चंद्र	23/11/2024 01:54	मंगल	29/11/2024 06:29	राहु	05/12/2024 15:14
चंद्र	18/11/2024 01:40	मंगल	23/11/2024 10:05	राहु	30/11/2024 07:28	गुरु	06/12/2024 11:06
मंगल	18/11/2024 10:52	राहु	24/11/2024 07:07	गुरु	01/12/2024 05:40	शनि	07/12/2024 10:42

राहु - गुरु - सूर्य - केतु		राहु - गुरु - सूर्य - शुक्र		राहु - गुरु - चंद्र - चंद्र		राहु - गुरु - चंद्र - मंगल	
07/12/2024 10:42		10/12/2024 00:04		17/12/2024 07:23		23/12/2024 09:29	
10/12/2024 00:04		17/12/2024 07:23		23/12/2024 09:29		27/12/2024 15:45	
केतु	07/12/2024 14:17	शुक्र	11/12/2024 05:17	चंद्र	17/12/2024 19:33	मंगल	23/12/2024 15:27
शुक्र	08/12/2024 00:30	सूर्य	11/12/2024 14:03	मंगल	18/12/2024 04:05	राहु	24/12/2024 06:47
सूर्य	08/12/2024 03:34	चंद्र	12/12/2024 04:39	राहु	19/12/2024 01:59	गुरु	24/12/2024 20:25
चंद्र	08/12/2024 08:41	मंगल	12/12/2024 14:53	गुरु	19/12/2024 21:28	शनि	25/12/2024 12:37
मंगल	08/12/2024 12:16	राहु	13/12/2024 17:11	शनि	20/12/2024 20:36	बुध	26/12/2024 03:06
राहु	08/12/2024 21:28	गुरु	14/12/2024 16:33	बुध	21/12/2024 17:18	केतु	26/12/2024 09:04
गुरु	09/12/2024 05:39	शनि	15/12/2024 20:19	केतु	22/12/2024 01:49	शुक्र	27/12/2024 02:07
शनि	09/12/2024 15:22	बुध	16/12/2024 21:09	शुक्र	23/12/2024 02:10	सूर्य	27/12/2024 07:14
बुध	10/12/2024 00:04	केतु	17/12/2024 07:23	सूर्य	23/12/2024 09:29	चंद्र	27/12/2024 15:45

राहु - गुरु - चंद्र - राहु		राहु - गुरु - चंद्र - गुरु		राहु - गुरु - चंद्र - शनि		राहु - गुरु - चंद्र - बुध	
27/12/2024 15:45		07/01/2025 14:44		17/01/2025 08:29		28/01/2025 22:05	
07/01/2025 14:44		17/01/2025 08:29		28/01/2025 22:05		08/02/2025 06:27	
राहु	29/12/2024 07:12	गुरु	08/01/2025 21:54	शनि	19/01/2025 04:26	बुध	30/01/2025 09:16
गुरु	30/12/2024 18:16	शनि	10/01/2025 10:55	बुध	20/01/2025 19:46	केतु	30/01/2025 23:45
शनि	01/01/2025 11:54	बुध	11/01/2025 20:01	केतु	21/01/2025 11:58	शुक्र	01/02/2025 17:09
बुध	03/01/2025 01:09	केतु	12/01/2025 09:40	शुक्र	23/01/2025 10:13	सूर्य	02/02/2025 05:34
केतु	03/01/2025 16:30	शुक्र	14/01/2025 00:37	सूर्य	24/01/2025 00:06	चंद्र	03/02/2025 02:16
शुक्र	05/01/2025 12:19	सूर्य	14/01/2025 12:19	चंद्र	24/01/2025 23:14	मंगल	03/02/2025 16:45
सूर्य	06/01/2025 01:28	चंद्र	15/01/2025 07:47	मंगल	25/01/2025 15:26	राहु	05/02/2025 06:00
चंद्र	06/01/2025 23:23	मंगल	15/01/2025 21:25	राहु	27/01/2025 09:04	गुरु	06/02/2025 15:07
मंगल	07/01/2025 14:44	राहु	17/01/2025 08:29	गुरु	28/01/2025 22:05	शनि	08/02/2025 06:27



अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 18 वर्ष 5 मास 14 दिन

शुक्र 21 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 15 वर्ष	मंगल 8 वर्ष	बुध 17 वर्ष
01/04/1987	14/09/2005	15/09/2011	15/09/2026	15/09/2034
14/09/2005	15/09/2011	15/09/2026	15/09/2034	15/09/2051
शुक्र 15/10/1988	सूर्य 14/01/2006	चंद्र 15/10/2013	मंगल 19/04/2027	बुध 19/05/2037
सूर्य 15/12/1989	चंद्र 15/11/2006	मंगल 25/11/2014	बुध 22/07/2028	शनि 15/12/2038
चंद्र 14/11/1992	मंगल 26/04/2007	बुध 05/04/2017	शनि 19/04/2029	गुरु 11/12/2041
मंगल 05/06/1994	बुध 05/04/2008	शनि 25/08/2018	गुरु 15/09/2030	राहु 01/11/2043
बुध 25/09/1997	शनि 25/10/2008	गुरु 15/04/2021	राहु 05/08/2031	शुक्र 21/02/2047
शनि 05/09/1999	गुरु 14/11/2009	राहु 15/12/2022	शुक्र 24/02/2033	सूर्य 01/02/2048
गुरु 16/05/2003	राहु 16/07/2010	शुक्र 14/11/2025	सूर्य 05/08/2033	चंद्र 12/06/2050
राहु 14/09/2005	शुक्र 15/09/2011	सूर्य 15/09/2026	चंद्र 15/09/2034	मंगल 15/09/2051

शनि 10 वर्ष	गुरु 19 वर्ष	राहु 12 वर्ष	शुक्र 21 वर्ष
15/09/2051	14/09/2061	14/09/2080	14/09/2092
14/09/2061	14/09/2080	14/09/2092	00/00/0000
शनि 18/08/2052	गुरु 17/01/2065	राहु 14/01/2082	शुक्र 01/04/2095
गुरु 23/05/2054	राहु 27/02/2067	शुक्र 15/05/2084	00/00/0000
राहु 03/07/2055	शुक्र 08/11/2070	सूर्य 14/01/2085	00/00/0000
शुक्र 12/06/2057	सूर्य 28/11/2071	चंद्र 15/09/2086	00/00/0000
सूर्य 01/01/2058	चंद्र 19/07/2074	मंगल 05/08/2087	00/00/0000
चंद्र 23/05/2059	मंगल 15/12/2075	बुध 25/06/2089	00/00/0000
मंगल 18/02/2060	बुध 12/12/2078	शनि 05/08/2090	00/00/0000
बुध 14/09/2061	शनि 14/09/2080	गुरु 14/09/2092	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 2 वर्ष 6 मास 28 दिन

भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
01/04/1987	29/10/1989	29/10/1995	29/10/2002	29/10/2010
29/10/1989	29/10/1995	29/10/2002	29/10/2010	29/10/2011
00/00/0000	उल्क 29/10/1990	सिद्ध 09/03/1997	संक 08/08/2004	मंग 08/11/2010
01/04/1987	सिद्ध 29/12/1991	संक 28/09/1998	मंग 28/10/2004	पिंग 28/11/2010
सिद्ध 30/04/1987	संक 29/04/1993	मंग 09/12/1998	पिंग 09/04/2005	धांय 29/12/2010
संक 08/06/1988	मंग 29/06/1993	पिंग 30/04/1999	धांय 08/12/2005	भाम 07/02/2011
मंग 29/07/1988	पिंग 29/10/1993	धांय 29/11/1999	भाम 29/10/2006	भद्रि 30/03/2011
पिंग 08/11/1988	धांय 29/04/1994	भाम 08/09/2000	भद्रि 09/12/2007	उल्क 30/05/2011
धांय 09/04/1989	भाम 29/12/1994	भद्रि 29/08/2001	उल्क 09/04/2009	सिद्ध 09/08/2011
भाम 29/10/1989	भद्रि 29/10/1995	उल्क 29/10/2002	सिद्ध 29/10/2010	संक 29/10/2011

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
29/10/2011	29/10/2013	28/10/2016	28/10/2020	29/10/2025
29/10/2013	28/10/2016	28/10/2020	29/10/2025	29/10/2031
पिंग 09/12/2011	धांय 28/01/2014	भाम 09/04/2017	भद्रि 09/07/2021	उल्क 29/10/2026
धांय 08/02/2012	भाम 30/05/2014	भद्रि 29/10/2017	उल्क 09/05/2022	सिद्ध 29/12/2027
भाम 29/04/2012	भद्रि 29/10/2014	उल्क 29/06/2018	सिद्ध 30/04/2023	संक 29/04/2029
भद्रि 08/08/2012	उल्क 30/04/2015	सिद्ध 09/04/2019	संक 08/06/2024	मंग 29/06/2029
उल्क 08/12/2012	सिद्ध 29/11/2015	संक 28/02/2020	मंग 29/07/2024	पिंग 29/10/2029
सिद्ध 29/04/2013	संक 29/07/2016	मंग 09/04/2020	पिंग 08/11/2024	धांय 29/04/2030
संक 08/10/2013	मंग 29/08/2016	पिंग 29/06/2020	धांय 09/04/2025	भाम 29/12/2030
मंग 29/10/2013	पिंग 28/10/2016	धांय 28/10/2020	भाम 29/10/2025	भद्रि 29/10/2031

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
29/10/2031	29/10/2038	29/10/2046	29/10/2047	29/10/2049
29/10/2038	29/10/2046	29/10/2047	29/10/2049	28/10/2052
सिद्ध 09/03/2033	संक 08/08/2040	मंग 08/11/2046	पिंग 09/12/2047	धांय 28/01/2050
संक 28/09/2034	मंग 28/10/2040	पिंग 28/11/2046	धांय 08/02/2048	भाम 30/05/2050
मंग 09/12/2034	पिंग 09/04/2041	धांय 29/12/2046	भाम 29/04/2048	भद्रि 29/10/2050
पिंग 30/04/2035	धांय 08/12/2041	भाम 07/02/2047	भद्रि 08/08/2048	उल्क 30/04/2051
धांय 29/11/2035	भाम 29/10/2042	भद्रि 30/03/2047	उल्क 08/12/2048	सिद्ध 29/11/2051
भाम 08/09/2036	भद्रि 09/12/2043	उल्क 30/05/2047	सिद्ध 29/04/2049	संक 29/07/2052
भद्रि 29/08/2037	उल्क 09/04/2045	सिद्ध 09/08/2047	संक 08/10/2049	मंग 29/08/2052
उल्क 29/10/2038	सिद्ध 29/10/2046	संक 29/10/2047	मंग 29/10/2049	पिंग 28/10/2052
भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
28/10/2052	28/10/2056	29/10/2061	29/10/2067	29/10/2074
28/10/2056	29/10/2061	29/10/2067	29/10/2074	29/10/2082
भाम 09/04/2053	भद्रि 09/07/2057	उल्क 29/10/2062	सिद्ध 09/03/2069	संक 08/08/2076
भद्रि 29/10/2053	उल्क 09/05/2058	सिद्ध 29/12/2063	संक 28/09/2070	मंग 28/10/2076
उल्क 29/06/2054	सिद्ध 30/04/2059	संक 29/04/2065	मंग 09/12/2070	पिंग 09/04/2077
सिद्ध 09/04/2055	संक 08/06/2060	मंग 29/06/2065	पिंग 30/04/2071	धांय 08/12/2077
संक 28/02/2056	मंग 29/07/2060	पिंग 29/10/2065	धांय 29/11/2071	भाम 29/10/2078
मंग 09/04/2056	पिंग 08/11/2060	धांय 29/04/2066	भाम 08/09/2072	भद्रि 09/12/2079
पिंग 29/06/2056	धांय 09/04/2061	भाम 29/12/2066	भद्रि 29/08/2073	उल्क 09/04/2081
धांय 28/10/2056	भाम 29/10/2061	भद्रि 29/10/2067	उल्क 29/10/2074	सिद्ध 29/10/2082
मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष
29/10/2082	29/10/2083	29/10/2085	28/10/2088	28/10/2092
29/10/2083	29/10/2085	28/10/2088	28/10/2092	00/00/0000
मंग 08/11/2082	पिंग 09/12/2083	धांय 28/01/2086	भाम 09/04/2089	भद्रि 09/07/2093
पिंग 28/11/2082	धांय 08/02/2084	भाम 30/05/2086	भद्रि 29/10/2089	उल्क 09/05/2094
धांय 29/12/2082	भाम 29/04/2084	भद्रि 29/10/2086	उल्क 29/06/2090	सिद्ध 01/04/2095
भाम 07/02/2083	भद्रि 08/08/2084	उल्क 30/04/2087	सिद्ध 09/04/2091	00/00/0000
भद्रि 30/03/2083	उल्क 08/12/2084	सिद्ध 29/11/2087	संक 28/02/2092	00/00/0000
उल्क 30/05/2083	सिद्ध 29/04/2085	संक 29/07/2088	मंग 09/04/2092	00/00/0000
सिद्ध 09/08/2083	संक 08/10/2085	मंग 29/08/2088	पिंग 29/06/2092	00/00/0000
संक 29/10/2083	मंग 29/10/2085	पिंग 28/10/2088	धांय 28/10/2092	00/00/0000



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 5 वर्ष 3 मास 29 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : भरणी - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

कन्या 9 वर्ष	कुम्भ 4 वर्ष	मकर 4 वर्ष	धनु 10 वर्ष	मेष 7 वर्ष
01/04/1987	30/07/1992	30/07/1996	30/07/2000	30/07/2010
30/07/1992	30/07/1996	30/07/2000	30/07/2010	30/07/2017
00/00/0000	कुंभ 07/10/1992	मक 07/10/1996	धनु 03/10/2001	मेष 26/02/2011
00/00/0000	मक 14/12/1992	धनु 28/03/1997	मेष 30/07/2002	वृष 21/06/2012
00/00/0000	धनु 04/06/1993	मेष 26/07/1997	वृष 17/06/2004	मिथु 19/03/2013
00/00/0000	मेष 03/10/1993	वृष 27/04/1998	मिथु 09/07/2005	कर्क 11/12/2014
01/04/1987	वृष 05/07/1994	मिथु 29/09/1998	कर्क 28/12/2007	सिंह 10/05/2015
वृष 14/11/1988	मिथु 06/12/1994	कर्क 25/09/1999	सिंह 30/07/2008	कन्या 05/02/2016
मिथु 28/10/1989	कर्क 02/12/1995	सिंह 19/12/1999	कन्या 21/08/2009	कुंभ 04/06/2016
कर्क 19/01/1992	सिंह 26/02/1996	कन्या 22/05/2000	कुंभ 09/02/2010	मक 02/10/2016
सिंह 30/07/1992	कन्या 30/07/1996	कुंभ 30/07/2000	मक 30/07/2010	धनु 30/07/2017
वृष 16 वर्ष	मिथुन 9 वर्ष	कर्क 21 वर्ष	सिंह 5 वर्ष	कन्या 9 वर्ष
30/07/2017	30/07/2033	30/07/2042	31/07/2063	30/07/2068
30/07/2033	30/07/2042	31/07/2063	30/07/2068	00/00/0000
वृष 03/08/2020	मिथु 13/07/2034	कर्क 07/10/2047	सिंह 15/11/2063	कन्या 13/07/2069
मिथु 14/04/2022	कर्क 02/10/2036	सिंह 01/01/2049	कन्या 26/05/2064	कुंभ 15/12/2069
कर्क 28/03/2026	सिंह 14/04/2037	कन्या 24/03/2051	कुंभ 20/08/2064	मक 18/05/2070
सिंह 07/03/2027	कन्या 28/03/2038	कुंभ 19/03/2052	मक 14/11/2064	धनु 09/06/2071
कन्या 14/11/2028	कुंभ 30/08/2038	मक 15/03/2053	धनु 17/06/2065	मेष 06/03/2072
कुंभ 16/08/2029	मक 31/01/2039	धनु 03/09/2055	मेष 15/11/2065	वृष 31/03/2072
मक 18/05/2030	धनु 22/02/2040	मेष 27/05/2057	वृष 24/10/2066	00/00/0000
धनु 05/04/2032	मेष 19/11/2040	वृष 10/05/2061	मिथु 06/05/2067	00/00/0000
मेष 30/07/2033	वृष 30/07/2042	मिथु 31/07/2063	कर्क 30/07/2068	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 9 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 9 वर्ष	
01/04/1987	
31/03/1996	
मेष	31/12/1987
मीन	30/09/1988
कुंभ	01/07/1989
मक	01/04/1990
धनु	31/12/1990
वृश्चि	01/10/1991
तुला	30/06/1992
कन्या	31/03/1993
सिंह	30/12/1993
कर्क	30/09/1994
मिथु	01/07/1995
वृष	31/03/1996

मेष 1 वर्ष	
31/03/1996	
31/03/1997	
वृष	01/05/1996
मिथु	31/05/1996
कर्क	30/06/1996
सिंह	31/07/1996
कन्या	30/08/1996
तुला	30/09/1996
वृश्चि	30/10/1996
धनु	30/11/1996
मक	30/12/1996
कुंभ	30/01/1997
मीन	01/03/1997
मेष	31/03/1997

मीन 12 वर्ष	
31/03/1997	
31/03/2009	
मेष	01/04/1998
वृष	01/04/1999
मिथु	31/03/2000
कर्क	31/03/2001
सिंह	01/04/2002
कन्या	01/04/2003
तुला	31/03/2004
वृश्चि	31/03/2005
धनु	01/04/2006
मक	01/04/2007
कुंभ	31/03/2008
मीन	31/03/2009

कुम्भ 11 वर्ष	
31/03/2009	
31/03/2020	
मीन	01/03/2010
मेष	30/01/2011
वृष	31/12/2011
मिथु	30/11/2012
कर्क	30/10/2013
सिंह	30/09/2014
कन्या	31/08/2015
तुला	31/07/2016
वृश्चि	01/07/2017
धनु	01/06/2018
मक	01/05/2019
कुंभ	31/03/2020

मकर 2 वर्ष	
31/03/2020	
01/04/2022	
धनु	31/05/2020
वृश्चि	31/07/2020
तुला	30/09/2020
कन्या	30/11/2020
सिंह	30/01/2021
कर्क	31/03/2021
मिथु	31/05/2021
वृष	31/07/2021
मेष	30/09/2021
मीन	30/11/2021
कुंभ	30/01/2022
मक	01/04/2022

धनु 3 वर्ष	
01/04/2022	
31/03/2025	
वृश्चि	01/07/2022
तुला	30/09/2022
कन्या	31/12/2022
सिंह	01/04/2023
कर्क	01/07/2023
मिथु	01/10/2023
वृष	31/12/2023
मेष	31/03/2024
मीन	30/06/2024
कुंभ	30/09/2024
मक	30/12/2024
धनु	31/03/2025

वृश्चिक 10 वर्ष	
31/03/2025	
01/04/2035	
तुला	30/01/2026
कन्या	30/11/2026
सिंह	01/10/2027
कर्क	31/07/2028
मिथु	31/05/2029
वृष	01/04/2030
मेष	30/01/2031
मीन	30/11/2031
कुंभ	30/09/2032
मक	31/07/2033
धनु	01/06/2034
वृश्चि	01/04/2035

तुला 4 वर्ष	
01/04/2035	
01/04/2039	
वृश्चि	01/08/2035
धनु	30/11/2035
मक	31/03/2036
कुंभ	31/07/2036
मीन	30/11/2036
मेष	31/03/2037
वृष	31/07/2037
मिथु	30/11/2037
कर्क	01/04/2038
सिंह	31/07/2038
कन्या	30/11/2038
तुला	01/04/2039

कन्या 7 वर्ष	
01/04/2039	
01/04/2046	
तुला	31/10/2039
वृश्चि	31/05/2040
धनु	30/12/2040
मक	31/07/2041
कुंभ	01/03/2042
मीन	30/09/2042
मेष	01/05/2043
वृष	30/11/2043
मिथु	30/06/2044
कर्क	30/01/2045
सिंह	31/08/2045
कन्या	01/04/2046

सिंह 5 वर्ष	
01/04/2046	
01/04/2051	
कन्या	31/08/2046
तुला	30/01/2047
वृश्चि	01/07/2047
धनु	30/11/2047
मक	01/05/2048
कुंभ	30/09/2048
मीन	01/03/2049
मेष	31/07/2049
वृष	30/12/2049
मिथु	01/06/2050
कर्क	31/10/2050
सिंह	01/04/2051

कर्क 3 वर्ष	
01/04/2051	
01/04/2054	
मिथु	01/07/2051
वृष	01/10/2051
मेष	31/12/2051
मीन	31/03/2052
कुंभ	30/06/2052
मक	30/09/2052
धनु	30/12/2052
वृश्चि	31/03/2053
तुला	01/07/2053
कन्या	30/09/2053
सिंह	30/12/2053
कर्क	01/04/2054

मिथुन 8 वर्ष	
01/04/2054	
01/04/2062	
वृष	30/11/2054
मेष	01/08/2055
मीन	31/03/2056
कुंभ	30/11/2056
मक	31/07/2057
धनु	01/04/2058
वृश्चि	30/11/2058
तुला	01/08/2059
कन्या	31/03/2060
सिंह	30/11/2060
कर्क	31/07/2061
मिथु	01/04/2062

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं ।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, अहो के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

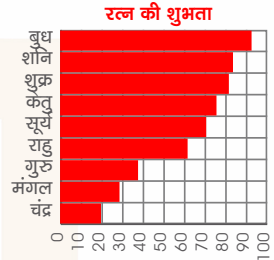


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	92%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	83%	दम्पति, भग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	81%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	75%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	70%	धनार्जन, सुख
गोमेद	राहु	61%	धनार्जन
पुखराज	गुरु	37%	हानि, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	28%	रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	19%	व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/07/1997	58%	0%	28%	98%	37%	94%	89%	67%	81%
सूर्य	24/07/2003	83%	31%	41%	92%	49%	69%	70%	47%	62%
चंद्र	24/07/2013	77%	44%	28%	98%	37%	81%	83%	47%	62%
मंगल	24/07/2020	77%	31%	52%	80%	49%	81%	83%	47%	81%
राहु	24/07/2038	58%	0%	3%	92%	37%	88%	89%	73%	62%
गुरु	24/07/2054	77%	31%	41%	80%	56%	69%	83%	61%	75%
शनि	24/07/2073	58%	0%	3%	98%	37%	88%	95%	67%	62%
बुध	24/07/2090	77%	0%	28%	100%	37%	88%	83%	61%	75%
केतु	24/07/2097	58%	0%	41%	92%	37%	88%	70%	47%	88%



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़तेरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना, नीलम, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ



फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है। तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठ, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यों से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 9 माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके ग्रहस्थ जीवन को सुखमय बनाये रखने का प्रयास करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय करेगा। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने में सहयोग करेगी। आपको ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुड़े कामों से लाभ मिलेगा। रत्न की शुभता से आपको किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेन्ट का काम करने से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते हैं। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती हैं। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपत्ति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते हैं। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्त के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा



सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा । रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का 9 माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्वाकांक्षी



बनाएगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पत्ति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्त के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



महत्वकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अहंकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज से जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में कमी के योग बना सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ सकता है। नौकर चाकरों से सुख सहयोग प्राप्त करने में आपको दिक्कतें आ सकती हैं। सरकारी क्षेत्र से आय प्राप्ति के लिए आपमें योग्यता की कमी हो सकती है। वैवाहिक जीवन के लिए भी यह रत्न अनुकूल नहीं रहेगा। आमदनी के साधन सीमित हो सकते हैं। आपके लाभ कम हो सकते हैं। यह रत्न आपको कंजूस बना सकता है। आपकी पूर्वार्जित संपत्ति को कोई छिन्नक का प्रयास कर सकता है। मित्रों की सलाह आपके भाग्य में कमी का कारण बन सकता है। संतान को लेकर आपको कुछ चिंताएं हो सकती हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आदेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती हैं। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चिरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है।



पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण से आप दुस्साहसी हो सकते है। जिसके कारण दुर्घटनाओं और चोटों की स्थिति बन सकती हैं। अत्यधिक दबाव में कार्य करने में आप असमर्थ हो सकते है। मूंगा रत्न आपको सिर दर्द दे सकता है। रत्न प्रभाव से वाणी पर नियंत्रण कम और आपका अत्यधिक क्रोध का स्वभाव हो सकता है। इसके अलावा यह रत्न धारण करने पर आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य की कमी के चलते बुखार आपको अपने प्रभाव में ले सकता है। इसके अतिरिक्त लग्न भाव में मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। अतः इस रत्न को यदि आप धारण करते है तो सुख, ग्रहस्थ जीवन एवं बाधाओं का सामना भी आपको करना पड़ सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ सकता है। सृजनात्मक कार्यों में आयु प्राप्त के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आयु प्राप्त के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थों का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते हैं। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यों में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु

(24/07/2020 - 24/07/2038)

राहु की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(24/07/2038 - 24/07/2054)

गुरु की दशा में आपका नीलम, पन्ना, माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(24/07/2054 - 24/07/2073)

शनि की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।



गोमेद, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(24/07/2073 - 24/07/2090)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा, नीलम, माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(24/07/2090 - 24/07/2097)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



HoruscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात् यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से



लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक कराये तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



HoruscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी आलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिर से दूसरे सिर तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना



गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त करता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अडियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओं की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।



इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/04/1987-17/12/1987	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा अंगुली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ॥

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए



आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



कालसर्प योग

अग्ने राहुर्घः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगोऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय । ।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सार्तो) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड़, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सार्तो ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक बहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवंशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।



6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शनि के कारण पितृदोष है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह अयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतर्संबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति होंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेम एवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभाववश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।



आपका मूलांक 1 है तथा भाग्यांक 3 है। मूलांक 1 का स्वामी सूर्य है तथा भाग्यांक 3 का स्वामी गुरु है। सूर्य एवं गुरु में सम संबंध होने से दोनों के प्रभावों में समानता रहेगी। आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, गुरु प्रभाव से, समय पर होगी। आपका कार्यक्षेत्र दोनों के संयुक्त प्रभाव से विस्तृत होगा और लोकप्रियता प्राप्त होगी। अंक 1 तथा अंक 3 दोनों ही आत्मा से संबंध रखते हैं। अतः मूलांक 1 के प्रभाव से जहां आपको आत्मशक्ति का ज्ञान मिलेगा, वहीं भाग्यांक 3 के प्रभाव से आत्मशक्ति के प्रसार और विस्तार का ज्ञान प्राप्त होगा, अर्थात् आपका कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत होगा और आप अधिक से अधिक जन संपर्क में आएंगे। आपका संपर्क क्षेत्र काफी विस्तृत होगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप एक सफल व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। आप ऐसा ही रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें आपकी हुकूमत बनी रहे एवं स्वतंत्रता से निर्णय लेने की सुविधा रहे। आप अपने ज्ञान के द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रियता प्राप्त करेंगे।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 3 के संयुक्त प्रभाववश आपका प्रारंभिक भाग्योदय 19 से 21 वर्ष की अवस्था में प्रारंभ हो कर 28 से 30 वर्ष की अवस्था पर अच्छी प्रगति प्राप्त करेगा एवं 37 से 39 वर्ष की आयु पर पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
- 3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
- 4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
- 6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
- 8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
- 9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।



ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जायेंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पायेंगे। यह सूचना आपकी भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पायेंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्ज्वल है।

लग्न फल

आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृष लग्नोदय काल में हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर कन्या नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काण उदित था। फलस्वरूप इस बात का द्योतक है कि आप (जन्मकाल) बाल्यावस्था से ही निश्चित रूप से सुखी, सुलभ, स्नेहयुक्त एवं आनन्दित जीवन व्यतीत करेंगे। आप सदैव ही नारी तथा धन से युक्त रहकर आनंद प्राप्त करेंगे।

आप सफलता प्राप्ति हेतु अंतिम क्षण तक सत्प्रयास करते रहेंगे मुख्यतः आप जीवन के 28 वें वर्ष के पश्चात् अपने परिश्रम को साकार कर लेंगे।

यद्यपि आप सहज स्वभाव के प्राणी हैं। आप में कुछ मुख्य गुण है कि आप प्रशंसनीय व्यक्ति हैं। आप उतावला होकर शीघ्रता पूर्वक कोई भी निर्णय नहीं लेते बल्कि शांत चित्त हो खूब सोच विचार करने के पश्चात् अपने विवेक से दूसरा कदम उठाते हैं।

आप अपनी योजना को तुलनात्मक ढंग से विभिन्न प्रकारेण अनुकूलता एवं प्रतिकूलता के संबंध में विस्तारपूर्वक अध्ययनकर कार्यरूप देते हैं। इसके पश्चात् अपनी आंकाक्षा को एकाग्रचित होकर संबंधित प्रस्ताव को समर्पित करते हैं। परंतु आप यदा-कदा स्वभाव से प्रीतिपूर्वक व्यवहार करते हैं जो आपके लिए बोझ-स्वरूप दबाव पूर्ण हो सकता है। इसलिए आपको एक बार ऐसा विचार करना चाहिए कि अपनी बुनियादी गुण को त्याग कर ही अपने विषयक कार्य को सफलता के द्वार तक पहुंचा सकते हैं।

आपको शारीरिक सुख भोग के लिए सतत कठिन परिश्रम करके ही पुरस्कार स्वरूप धन, संपत्ति प्रतिष्ठा एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आप एक बार प्रगति के पथ पर अग्रसर हुए तों आपकी अपेक्षित धन संचय की लालशा पूरी हो जाएगी तथा बहुत अधिक धन संचय कर लेंगे। क्योंकि आप महान कृपण हैं अतः जीवन पर्यंत धन संपत्ति संचय करते रहेंगे।

आपको बहुत धनोपार्जन हेतु सुदंर एवं अनुकूल व्यवसाय आरामदायक वस्तुओं का व्यवसाय कृषि उपकरणों का व्यवसाय, वित्तीय (लेन-देन) दलाली का व्यवसाय, कलात्मक वस्तुओं का व्यवसाय, रत्नादि एवं ट्रांसपोर्ट (मालवाहक) संबंधी कार्यों के द्वारा अतिरिक्त धन उपार्जन कर सकेंगे।

आप सदैव ही विपरीत योनि के साथ आंख मिलाते रहना चाहते हैं। आप सदैव कामुकता पूर्ण आनंद प्राप्त करना पसंद करते हैं। अंततः आपके महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील जनेन्द्रिय को क्षति होने की आशंका है। अस्तु उत्तम यह है कि आप इस प्रवृत्ति का त्याग कर दें।



आप निरंतर सुखद एवं शांतिपूर्ण घरेलू जीवन व्यतीत करेंगे। यह संभाव्य है कि आप मुख्यतया अपना सर्वोत्कृष्ट जीवन साथी बनाएंगे।

वृष राशीय जातक को निर्देश है कि आप अपने पति/पत्नी अथवा मित्रता के लिए उपयुक्त राशि कन्या, मकर, मीन एवं वृश्चिक राशि के जातक अनुकूल हैं। इन राशियों का योग मानवीय एवं आनंददायक होगा। आप सदैव ही अपने पारिवारिक प्रसन्नता हेतु बहुत कुछ करते रहते हैं। आप वांछनीय एवं स्वस्थ जीवन के लिए सभी वांछित वस्तुओं की व्यवस्था एवं समर्पण करते हैं।

यद्यपि आप विस्तृत सम्पत्ति के स्वामी होंगे। आप शांतचित्त हृष्ट-पुष्ट शरीर से युक्त, संवेदनशील एवं जीवन में कुछ समय के बाद हल्के रोगों की आशंका है। आप गले के संक्रमण, कफ एवं शीत प्रभाव से शरीर में फोड़ा-फुंसी, दाद खुजली एवं शारीरिक पीड़ा से पीड़ित रहेंगे। अस्तु समय-समय पर अपने पारिवारिक चिकित्सक से संबंधित रह कर, इन रोगों के प्रति सतर्क रहें।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरुवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

आपके लिए अंक 2 एवं 8 अंक अनुकूल और महत्वपूर्ण है। परंतु अंक 5 आपके लिए त्याज्य है।

आपके लिए सभी रंगों में सुंदर एवं अति उत्तम रंग सफेद, हरा एवं गुलाबी रंग है। रंग लाल आपके लिए त्याज्य है।



HoruscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।



आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, कूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं कूर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दयालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्वय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी



होता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आनुवंशिक, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिश्ते, विवाह एवं व्यवसाय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न मनुष्य धैर्य युक्त एवं सहनशील स्वभाव के होते हैं तथा अपने वार्तालाप में सर्वदा मधुर वाणी का उपयोग करते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता विद्यमान रहती है तथा अपने परिश्रमशील स्वभाव के द्वारा वे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करने में समर्थ होते हैं जिससे समाज में उनको मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में सुखऐश्वर्य से युक्त होकर वे भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हैं। वे शांत स्वभाव के होते हैं परन्तु पराक्रम एवं उत्साह से पूर्ण रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपकी वाणी मधुर होगी तथा स्ववाक्चातुर्य से आप अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव विद्यमान होगा। आपके सांसारिक महत्त्व के कार्य यथा समय पूर्ण होंगे जिससे आपको सुखैश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आप एक उत्साही पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरुष होंगे तथा इनसे जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलताओं को अर्जित करेंगे। आप अपने श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रखने में समर्थ होंगे। आप में विद्वता का भाव भी रहेगा तथा कला एवं साहित्य के क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक उन्नति करेंगे। साथ ही जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त करके प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में मंगल के प्रभाव से आप एक साहसी पराक्रमी तथा तेजस्वी पुरुष होंगे तथा यदा कदा आप क्रोध के भाव को भी प्रदर्शित करेंगे लेकिन क्रोध के भाव पर आपको यत्नपूर्वक नियंत्रण रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हों। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। लेकिन आपके सांसारिक महत्त्व के सभी कार्य पराक्रम तथा परिश्रम से सफल होंगे तथा जीवन में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा अपने कार्य कलापों में बुद्धिमता की छाप अवश्य छोड़ेंगे।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा परन्तु उदारता का भी आप समय समय पर प्रदर्शन करेंगे तथा जरूरतमंद लोगों की समय समय पर सेवा एवं सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन परिश्रम एवं योग्यता से आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इच्छित धन वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ होंगे। स्त्री से आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति भी यदा कदा आप रुचि



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



का प्रदर्शन करेंगे तथा न्यूनाधिक रूप से इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के इच्छुक होंगे।

इस प्रकार आप पराक्रमी तेजस्वी साहसी तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा जीवन में स्व योग्यता से सफलता अर्जित करके सुखपूर्वक समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृत्ति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रुचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते हैं। यदि आप यह अनुभव करते हैं कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृत्ति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका कोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यों से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उद्देश्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रुचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते हैं जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचन से ही आपकी रुचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उत्तीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।



प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्य बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक तथा अन्य कार्य कलापों को सामान्य बुद्धि से ही सम्पन्न करेंगे। आपको गंभीर समस्याओं का समाधान करने में काफी परिश्रम का सामना करना पड़ेगा। अतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करने में विलंब का सामना करना पड़ेगा। वैदिक एवं धर्मशास्त्र तथा दर्शन के ग्रन्थों में आपकी अल्प रुचि होगी परंतु आधुनिक एवं पाश्चात्य साहित्य एवं विज्ञान में अवश्य रुचि एवं अध्ययनशील होंगे तथा इनमें आप परिश्रम पूर्वक न्यूनाधिक मात्रा में सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगे। जिससे समाज में आपको यथोचित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा कई बार एक से अधिक प्रसंग भी आप स्थापित कर सकते हैं। आपके लिए प्रेम प्रसंगों में मर्यादा तथा आदर्श के भाव की न्यूनता होगी जिससे कई बार आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः ऐसी प्रवृत्तियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

केतु की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में काफी विलंब का सामना करना पड़ सकता है परंतु विलंब से ही सही संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति गुणवान, तेजस्वी एवं पराक्रमी होगी तथा जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में उनको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथापि अपनी आजीविका अर्जित करने में वे समर्थ होंगे। लेकिन वह हठी एवं मनमौजी प्रवृत्ति के होंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपनी मर्जी से सम्पन्न करेंगे एवं माता पिता की सलाह लेना आवश्यक नहीं समझेंगे। माता पिता का ध्यान भी वृद्धावस्था में कम ही रखेंगे। अतः बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। माता की अपेक्षा पिता से उनका अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के ही माध्यम से करना पसन्द करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चों की उन्नति संतोषप्रद होगी तथा आजीविका प्राप्त करने की आवश्यकता ही पूर्ण होगी तथापि वे व्यवहार कुशल होंगे। अतः धन ऐश्वर्य की उनके पास कमी नहीं होगी। जिससे उनका जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त वे स्वभाव से तेजस्वी भी होंगे अतः समय समय पर अन्य सामाजिक जनों से उनका वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे समाज में उनके एवं आपके मान सम्मान में कमी भी आ सकती है। अतः ऐसी स्थितियों की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए तभी आपका एवं उनका जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत हो सकता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते हैं लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेंगे तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ोसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यों को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाड़यों या संबन्धियों के कारण आपको ऋण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्द तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यों से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।



परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया वृश्चिक राशि के सप्तम भाव में होने से जातक का सहयोगी धनवान पित प्रकृति एवं व्ययशील प्रवृति का मनुष्य होता है। साथ ही शनि के प्रभाव से वह उग्रस्वभाव पराक्रमी एवं साहसी होता है लेकिन चंचलता की अपेक्षा गंभीरता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमती महिला होगी तथा चतुराई से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेगी। वह भौतिकतावादी एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी एवं पाश्चत्य शास्त्रों के अध्ययन में विशेष रुचि रखेंगी। साथ ही गंभीरता का भाव भी उनके स्वभाव में विद्यमान होगा कर्तव्य परायणता की भावना भी उनमें रहेगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर होंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद ऊंचा रहेगा। शारीरिक संरचना शनि जैसे शुष्क ग्रह के प्रभाव से दुबली पतली होगी परन्तु आकर्षण विद्यमान रहेगा साथ ही अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे उनका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सौन्दर्य के प्रति सतर्क रहेंगी एवं समयानुसार सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा लेकिन वैवाहिक प्रक्रिया समय पर पूर्ण हो जाएगी। आपका विवाह विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा एवं विशिष्ट परिस्थितियों में आप अपनी इच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकते हैं विवाह के बाद सामान्यतया आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा परन्तु दोनों की प्रवृति स्वाभिमानी एवं तेजस्वी होने के कारण अल्प समय के लिए आपसी वाद विवाद के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है अतः यदि आप दोनों संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य लें तो संबंधों में मधुरता हो सकती है।

आपका विवाह समृद्ध एवं धनवान परिवार से सम्पन्न होगा तथा सामाजिक रूप से भी वे प्रभावशाली रहेंगे अतः विवाह के समय देहेज के रूप में आपको पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी एवं अन्य बहुमूल्य उपहार भी मिलेंगे साथ ही भविष्य में भी आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा विशिष्ट अवसरों पर ही मेल मिलाप होगा लेकिन आपसी सौहार्दता बनी रहेगी।

वृश्चिक राशि में शनि के प्रभाव से आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा की भावना अल्प होगी एवं सुख दुःख में उनका ध्यान कम ही रखेंगी। अपने उग्रस्वभाव



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



से देवर एवं ननद भी उनको विशेष सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे जिससे पारिवारिक सुख शांति प्रभावित होगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा इससे हानि की संभावना रहेगी अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।



100



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते हैं जिससे अनावश्यक तर्क विर्तकों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराकर्म से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रुचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते हैं। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़वस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्माननीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही लग्नेश शुक्र भी दशम भाव में ही स्थित है। कुम्भ राशि वायुतत्व एवं शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपको व्यवसाय श्रमसाध्य होगा परन्तु बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की भी प्रमुखता होगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में स्थायित्व रहेगा एवं परिवर्तन की संभावनाएं कम ही होंगी।

लग्नेश शुक्र की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपकी आजीविका का क्षेत्र कला, संगीत, सिनेमा, दूरदर्शन विभाग, इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग, न्याय विभाग तथा न्यायधीश वकील या न्यायालयीय कर्मचारी, सचिव सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार हो सकता है। यदि आप उपरोक्त विभागों या क्षेत्रों में अपना आजीविका संबंधी कार्य प्रारंभ करेंगे तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा भविष्य के लिए भी उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। अतः अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको इन्हीं क्षेत्रों में अपना कार्य प्रारंभ करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए चांदी, सोना, रत्न आदि का व्यापार, चतुष्पाद या वाहन संबंधी क्रय-विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौंदर्य प्रसाधन सामग्री तथा रेशमी या अन्य वस्त्रों का आयात निर्यात तथा मूल्यवान मदिरा आदि का व्यापार आपके लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप इन पदार्थों या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करेंगे तो आपको इच्छित मात्रा में धनार्जन होगा तथा उन्नति के मार्ग में अग्रसर होंगे।

लग्नेश की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट मान सम्मान तथा पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपके मान प्रतिष्ठा एवं यश की अभिवृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही सामाजिक या धार्मिक प्रतिष्ठानों से भी आपका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से संबंध होगा एवं इनमें पदाधिकारी के रूप में आप कार्य करेंगे। शुक्र की नैसर्गिता शुभता के प्रभाव से आपको बिना किसी विलम्ब एवं व्यवधान के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलेगी जिससे आपको मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

नैसर्गिक शुभ ग्रह शुक्र के प्रभाव से आपके पिता आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी, बुद्धिमान शिक्षित एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका प्रभुत्व रहेगा फलतः सभी लोग उन्हें वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही अन्य जनों की भलाई के कार्यों में भी उनकी रुचि होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा के प्रति पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में उनका विशेष योगदान होगा तथा



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



उनके प्रभाव से भी आपको इच्छित सफलता एवं प्रतिष्ठा मिलेगी। साथ ही पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप दोनों का परस्पर उत्तम सामंजस्य रहेगा एवं संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।



लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते हैं आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते हैं या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते हैं जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते हैं परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप सामान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते हैं।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यों पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यों से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।



नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निर्धारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका मनुष्य गण, गज योनि, मध्य नाडी, क्षत्रिय वर्ण तथा मृग वर्ग होगा। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम का प्रथम अक्षर "लू" से प्रारम्भ होगा।

भरणी नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप मनोरंजन के साधनों में गीत, संगीत, नृत्य या अन्य कलाएं तथा खेलकूद के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगे तथा अपने समय का अधिकांश भाग इसी पर व्यतीत करेंगे। स्वभाव से ही पानी से आपको भय महसूस होगा। कभी कभी स्नानादि कर्म की भी आप इसी सन्दर्भ में उपेक्षा करेंगे। चंचलता का समावेश आपकी प्रवृत्ति में रहेगा। तथा अन्य लोगों से आपका अच्छा व्यवहार नहीं रहेगा।

सदापकीर्ति हिं महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः ।

जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः ।।

जातकाभरणम्

अर्थात् भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरु, चंचल प्रवृत्ति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे। एक बार जिस संकल्प को ले लेंगे उसे जी जान से पूर्ण करेंगे। सत्य बोलना तथा सत्य का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके शरीर में स्वस्थता बनी रहेगी तथा रोग ग्रस्त कम ही रहेंगे। चतुराई का गुण आप में स्वाभाविक होगा जो भी कार्य करेंगे आपकी दक्षता की झलक उसमें स्पष्ट दिखाई देगी। अतः आपका जीवन सुखी रहेगा।

कृत निश्चयः सत्यारूढक्षः सुखितश्च भरणीषु ।

बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आप किसी विशेष बात की हठ करेंगे और उसे पूरा ही करके छोड़ेंगे चाहे अन्य लोगों को उस से कोई परेशानी ही क्यों न हो इससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। आपके पास सम्पत्ति पूर्ण रूप से रहेगी एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा, शरीर



से भी आप स्वस्थ रहेंगे तथा मुखाकृति दर्शनीय रहेगी।

**अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढव्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।
जातक दीपिका**

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते हैं।

यदा कदा शारीरिक और मानसिक व्याकुलता से आप कष्ट का अनुभव करेंगे। जन सामान्य पर प्रभाव स्थापित करने के लिए कभी कभी आप कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे परन्तु धन से आप युक्त रहेंगे। तथा धनाभाव आजीवन नहीं रहेगा।

**याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः**

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतधन एवं धनी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरुष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्हीं विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

आपका जन्म मेष राशि में हुआ है। अतः आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। साथ ही अन्य भाईयों में श्रेष्ठ होंगे। आप माता पिता के इकलौते पुत्र भी हो सकते हैं।

**मेषस्ये यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः**

आपके शरीर का वर्ण ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आर्खें लालीयुक्त



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



गोल होंगी। आपके सिर पर ब्रण का निशान भी हो सकता है।

अल्प केशों से सिर सुशोभित होगा तथा कमल की कान्ति के समान आपके हाथ पैर होंगे। जल से भयभीत रहना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी। साहस तथा संघर्ष की शक्ति का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा अपने साहस से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रकृति चंचल होगी तथा धन को मान सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे जिससे कभी कभी परेशानियां उत्पन्न होंगी। सहयोगी तथा मित्र बड़ी संख्या में आपके पास होंगे। पुत्र भी पुत्रियों की अपेक्षा अधिक होंगे। स्त्री जाति आपकी कमजोरी होगी तथा उनके आगे आप पराजित सा महसूस करेंगे। लेकिन जनसामान्य से आपका स्नेहयुक्त व्यवहार रहेगा। अपने सद्व्यवहार तथा विनयशीलता के कारण आप पूर्ण सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।

कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।

पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।

सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।

सारावली

आप स्वभाव से ही शीघ्र क्रोध करने वाले तथा शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले होंगे। आपकी प्रवृत्ति सुदूर क्षेत्रों में भ्रमण करने की होगी। आपके हाथ की हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा पताका चक्र आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप काफी लोकप्रिय रहेंगे। लेकिन सबके साथ सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा लोगों को अपनी परेशानी के समय भी सहायता प्रदान करेंगे।

वृताताम्बुगुण्णशाकलधुभुक् क्षिप्रप्रसादोदनः।

कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।

कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाश्रजः।

शक्त्यापणितलेडतोळित चपलस्तोये च भीरुः किये।।

बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करने की प्रवृत्ति आपके बुजुर्गों तथा श्रेष्ठ संबंधियों की असन्तुष्टि का कारण बनेगा। जिससे वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप भी उनसे अलग हो सकते हैं। साथ ही आपके अधिकांश घरेलू कार्य स्त्री की सलाह से ही सम्पन्न होंगे अतः तनाव तथा अलगाव का यह भी मुख्य कारण रहेगा। धन तथा पुत्र से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा सामाजिक कीर्ति भी प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।

अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।



जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थानों पर जाना पसन्द करेंगे जो अगम्य हो अर्थात् जहाँ का भ्रमण आसानी से न किया जा सके। आपके सामाजिक संबंध विस्तृत होंगे अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा इत्यादि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेघे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः ।

वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपकी प्रकृति में कभी कभी उग्रता का प्रभाव भी परिलक्षित होगा। जब कभी आप अनावश्यक उग्रता दिखाएंगे समस्याएं उत्पन्न होगी। प्रवृत्ति भी आपकी प्रारम्भ से चंचल रहेगी तथा अवसर पड़ने पर आप मिथ्याभाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुद्यो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी ।

संचारशीलश्चपलोडनुतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियमे प्रजातः ।।

फलदीपिका

सौगिक क्रिया आपको रुचिकर लगेगी तथा सिर अल्प केशों से युक्त रहेगा। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले पदार्थों का आप यथाशक्ति परहेज करें अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। दुर्घटनाओं से बचें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो ।

न भवति सुसम्बुद्धो नैव दारिद्र्य युक्तः ।।

व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी ।

संभवति पुरुषोऽयं मेघ राशौ ।।

जातक दीपिका

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः जन्म से ही आप धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। देवताओं तथा ब्राह्मणों में आपकी असीम श्रद्धा होगी। आप धनवान होंगे परन्तु साथ ही अभिमान भी आपके अन्दर होगा। आप दयावान तथा बलवान होंगे तथा दीन दुःखियों की आप सच्चे मन से सेवा करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के कार्य तथा कलाओं के ज्ञाता होंगे। ज्ञान प्राप्त करने में आप की अभिरुचि रहेगी। आपका शरीर सुन्दर तथा कान्ति युक्त होगा। आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करेंगे तथा कई लोग आप पर आश्रित होंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः ।

पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः ।।

कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



111

चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः ।।

मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी रहेंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने में सफल रहेंगे। आप किसी नगर के सम्मानित तथा आदरणीय व्यक्ति भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः ।

प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः ।।

जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप गज योनि में पैदा हुए हैं। अतः आप राजा के द्वारा पूर्ण सम्माननीय होंगे तथा बड़े बड़े अधिकारियों तथा मंत्रियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे। आप आत्मबल बुद्धिबल तथा बाहुबल से युक्त रहेंगे। समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आप बाल्य काल से ही उत्साही रहेंगे तथा इसी उत्साही प्रवृत्ति से कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः ।

आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः ।।

मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्य के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन



आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धांतिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार तथा प्रथम प्रहर एवं मेष राशि में स्थित चन्द्रमा आपके लिए हानिकारक है। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1, 6, 11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि न करे। इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही मघा नक्षत्र, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। उपरोक्त अशुभ समय में शरीर की भी पूर्ण सुरक्षा रखें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि ,नौकरी ,पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए। इसके साथ ही सोना, तांबा, गेहूं, घी, रक्त वस्त्र आदि पदार्थों का दान करना चाहिए इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। साथ ही मंगल के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। मंगलवार के उपवास भी शुभकार्यों की वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होंगे।

ॐ क्रां क्रीं क्रो सः भौमाय नमः।

मंत्र- ॐ हूं शीं भौमाय नमः।



लाल किताब

लाल किताब को इसके सहज, सस्ते एवं विश्वसनीय उपायों के कारण ज्योतिष का वंडर बुक कहा जाता है।

लाल किताब के ज्ञान को व्यावहारिक माना जाता है क्योंकि यह परंपरागत ज्योतिष के ज्ञान से अलग है। वैदिक ज्योतिष की भांति लाल किताब में भी नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है। साथ ही 12 भागों की ग्रह स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष और लाल किताब में कुछ मूलभूत अंतर है। वैदिक ज्योतिष में भाव स्थिर होते हैं किंतु राशियां स्थिर नहीं होतीं किंतु लाल किताब में भाव एवं राशियां दोनों ही स्थिर होते हैं। लाल किताब कुंडली एवं वर्षफल भी उपायों के संदर्भ में विशद सूचना प्रदान करते हैं जिसे बिल्कुल अलग तरह का, विश्वसनीय, सहज एवं सस्ता माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुँडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुँडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की



बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



निशानिया :

जातानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेदा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में



दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दौंतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :



किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिक्षा, यात्रा एवं स्थानांतरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य तथ्यों के गोचर पर आधारित है।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में शनि दशम में और राहु मीन राशि में एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में द्वादश में रहेंगे और। मई को वृष राशि में लग्न भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ बाहरी या विदेशी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु व्यापार में नये अवसरों का संकेत दे रहा है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान के राहु अचानक लाभ कराते रहेंगे जिससे आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आपके पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अप्रैल से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी सर्वप्रकारेण उन्नति होगी। व्यावसायिक जीवन में स्थिरता आपके लिए वरदान सिद्ध होगी तथा कोई भी व्यवधान आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के आपके प्रयास में बाधक सिद्ध नहीं हो सकता। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा व परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव रहेगा।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आपकी अहम भूमिका होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु सन्तान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है, परन्तु अप्रैल के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे व शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान हेतु शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय भाग्यवर्द्धक है। यदि विवाह के योग्य है, तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य, दिनचर्या व आहार सम्बन्धी अनुशासन में निश्चित रूप से सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय पूर्णतः अनुकूल हो जायेगा।

आप शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त कर पायेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता निश्चित है। अनुभवी व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।



यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं।

अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा के लिए शुभ है। कुल मिलाकर यह वर्ष छोटी व लम्बी तथा अन्य सभी प्रकार की यात्रा के लिए शुभ रहेगा तथा यात्राएं सौभाग्यवर्द्धक सिद्ध होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे जैसे- गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- नित्यप्रति सूर्य को अर्घ्य दें।



HoroScopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



मासिक फलादेश

जनवरी 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

फरवरी 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग! आपसे पूर्ण प्रसन्नता सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र



आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

मार्च 2024 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राह्मणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

अप्रैल 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रुचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबंधियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थों की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रुधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

मई 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगे तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

जून 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यों में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे



प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2024 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही इस मास में मिष्टान्न के प्रति आपके मन में विशेष रुचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

अगस्त 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

सितम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विध्वन बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रूग्ण विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अक्तूबर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रुचि रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी।
देवता एवं



ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

नवम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे। अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं। साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबंधियों से आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

दिसम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे। अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रुचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।



वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। असुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएं। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।



करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको



अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे।



धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको
भाईयों का पूर्ण



सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्त के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निर्धारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव



से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।



घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



दुघटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।



- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें ।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा।



गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छटे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संबंध भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में



आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लगन स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

• बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गशी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संबंध भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को



उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।



HoroScopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावना बनाएं हुए है।



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



HoruscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छटे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्ग्री होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्टूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें। आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।



इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्टूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23 अक्टूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23 अक्टूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्टूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का



व्रत करें।

- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत



करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।



- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वल्प प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खल्ल-मील अनुभव होना रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आय-सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समाप्त समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(24/07/2020 - 24/07/2038)

राहु की महादशा 24/07/2020 को आरम्भ और 24/07/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सद्दा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इंजीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रुचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।



अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(06/04/2023 - 29/08/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 06/04/2023 को प्रारंभ होकर 29/08/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, ज्ञानवान, धनी और बुद्धिमान बनेंगे। पर्याप्त संख्या में उत्तम मित्र होंगे। जरूरतमंदों की मदद करेंगे। इस अवधि में विकसित गुणों का समुचित उपयोग भविष्य तक लाभकारी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

अंतर्दशा :- राहु - शनि
(29/08/2025 - 05/07/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 29/08/2025 को प्रारंभ होकर 05/07/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 9, 1, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नीतिवान और उद्यमी होंगे। आपके जीवनसाथी आपके ऊपर हावी हो सकते हैं। विदेश में निवास हो सकता है या वहां जायदाद खरीद सकते हैं। बहरेपन और उदरशूल से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है, शुभफल अवश्य मिलता है, मगर कुछ देरी से।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(05/07/2028 - 23/01/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/07/2028 को प्रारंभ होकर 23/01/2031 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्नी में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान और सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांचों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों के विद्वान हो सकते हैं। स्पष्टवादी हो सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार, धर्म और अध्यात्म में सफल होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। नेत्र के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु
(23/01/2031 - 10/02/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 23/01/2031 को प्रारंभ होकर 10/02/2032 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली



के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप भावनात्मक रूप से विचलित हो सकते हैं। प्रत्येक कार्य में सावधानी अपनाना श्रेयस्कर रहेगा। उदर रोग हो सकता है, अतः खानपान में संयम अपनाने से लाभ होगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(10/02/2032 - 10/02/2035)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 10/02/2032 को प्रारंभ होकर 10/02/2035 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंधित गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, फैशन आदि से संबंधित व्यापार में लाभ हो सकता है। समाज में सफल रहेंगे, प्रसिद्ध बनेंगे। मन में कुछ नये, विचित्र विचार आ सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



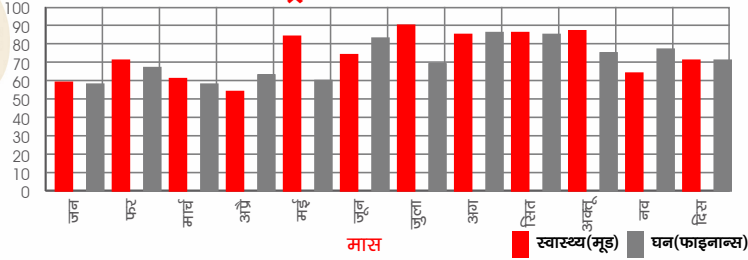
एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय घटनाओं का ग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है तथा ग्राफ के रूप में ही फलादेश दिया गया है।

जीवन में आने वाले समय का उतार-चढ़ाव का एस्ट्रोग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है जिसे समझना सहज और आसान होता है। यह एक खास समय में आपकी उन्नति अथवा अवनति की मात्रा को दर्शाता है। इस एस्ट्रोग्राफ पर सरसरी दृष्टिपात कर आप पता कर सकते हैं कि आनेवाला कौन सा समय आपके लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

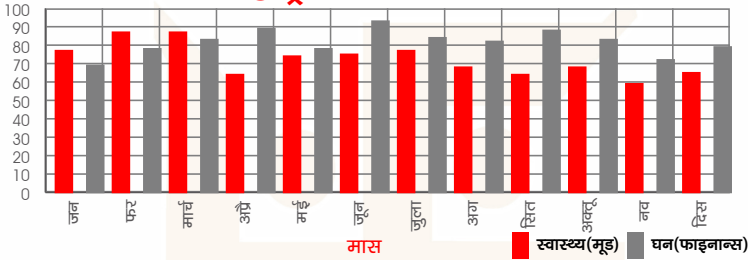
प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2024



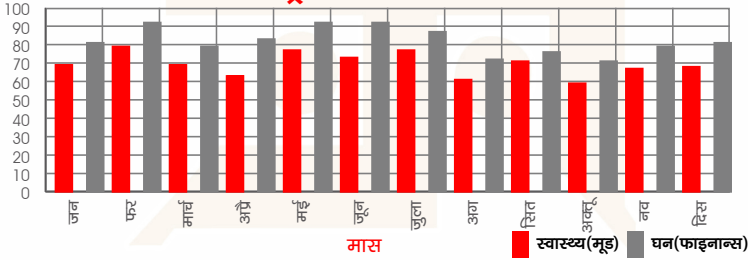
प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2025



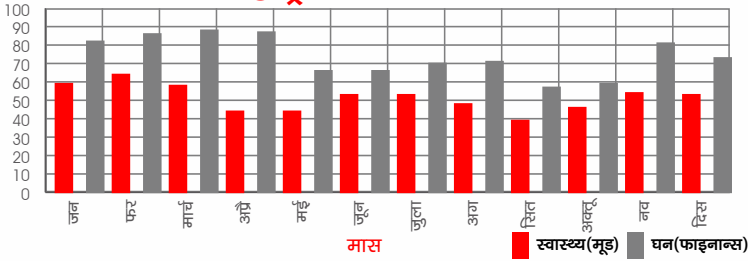
प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2026



प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2027



HoroscopeCart

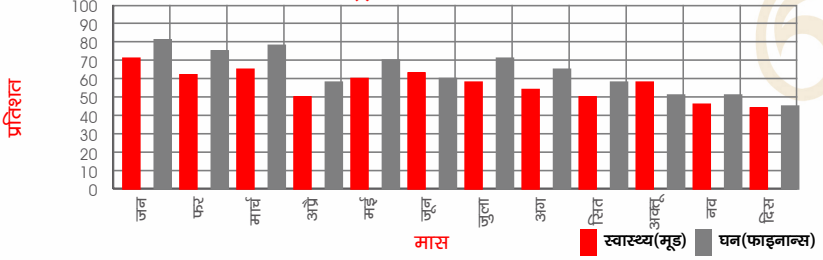
Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

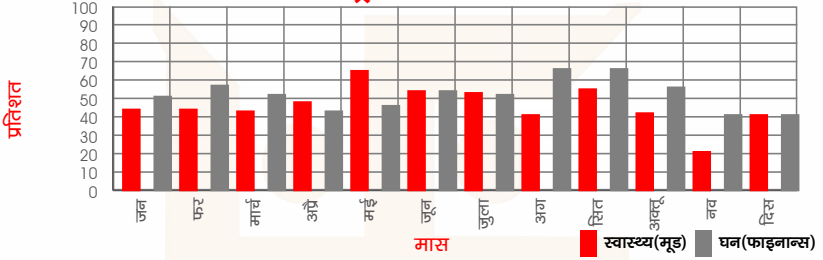
Website : www.horoscopecart.com



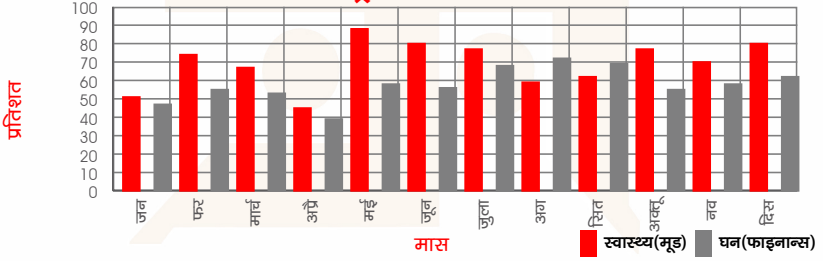
एस्ट्रोग्राफ - 2028



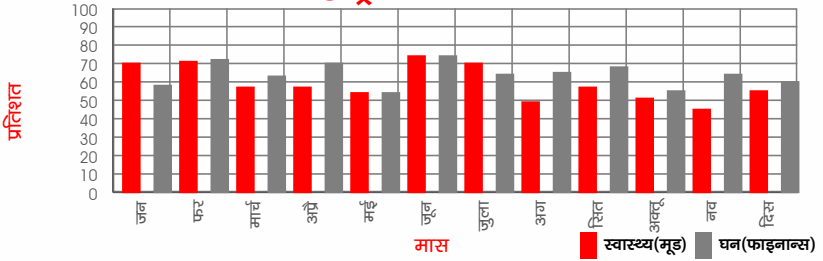
एस्ट्रोग्राफ - 2029



एस्ट्रोग्राफ - 2030

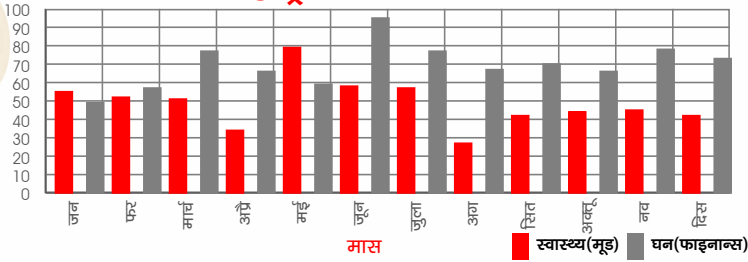


एस्ट्रोग्राफ - 2031



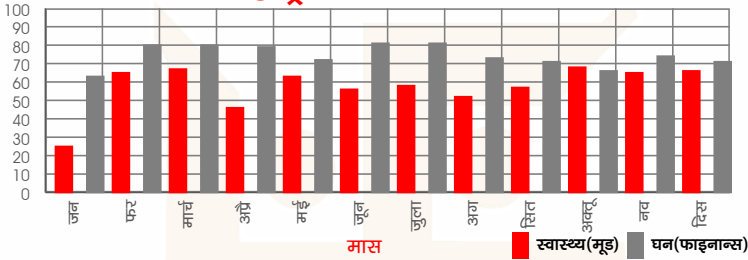
प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2032



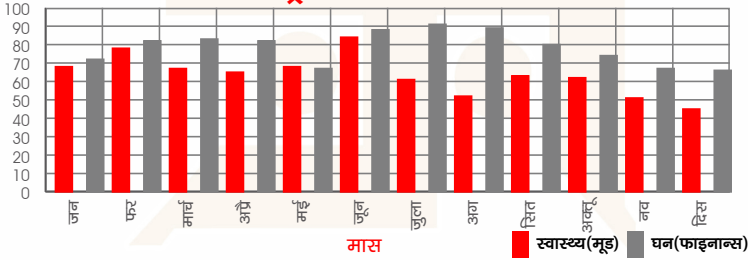
प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2033



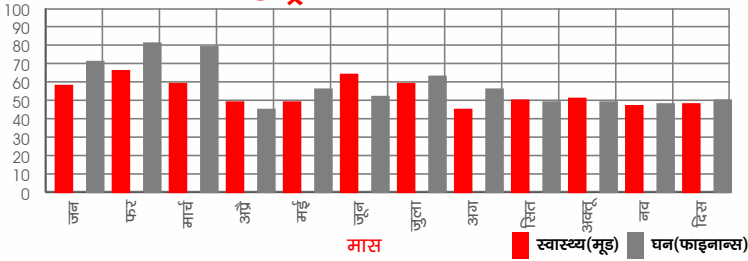
प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2034



प्रतिशत

एस्ट्रोग्राफ - 2035



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से ख़ास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग-अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्त्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम् ।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ॥

॥ सारावली ॥ अ. 35 /श्लोक 64 ॥

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्रध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः ॥
क्वचित्क्वचिन्द्वाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम् ।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुःखी ॥



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 14, 17 ॥

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योमन्यमलाहवयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।

क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

पुष्कलयोग

जन्मेशे सहिते विलग्नपतिना केन्द्रेऽधिमित्रर्क्षगे।

लग्नं पश्यति कश्चिदत्र बलवान्योगो भवेत्पुष्कलः॥

श्रीमान् पुष्कलयोगजो नृपवरैः संमानितो विश्रुतः।

स्वाकल्पाम्बरभूषितः शुभवचाः सर्वोत्तमः स्यात्प्रभुः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6॥ श्लोक 19-20 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्न का स्वामी और चंद्रमा जिस राशि में है उनके स्वामी एक साथ केन्द्र में हों तथा अधिमित्र के घर में हो और कोई बलवान ग्रह लग्न को दे खे तो पुष्कलयोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,केतु

योग की संभावना : 144 में 1



आपकी जन्म कुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप राजाओं/राजपक्ष से सम्मानित होंगे। आप धनी और प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। आप सुखमयजीवन व्यतीत करेंगे, शुभवक्ता, जनप्रिय और उत्तम पद प्राप्त करेंगे तथा उत्तम वस्त्राभूषण से युक्त रहेंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.7/भाव-9/श्लोक-45 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः ।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः ।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात् ।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने ॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 4 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



अनफा योग

अनफा रविरहितैः ।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्दिवहगैः ॥
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम् ।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः ॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 5 ॥

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे ।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : सूर्य, राहु, केतु, गुरु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है ।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमात्रीतिमान् भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-32 ॥



यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, बुध

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-9 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, गुरु, शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.- 295 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।

मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ॥

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम्॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राग्निः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराशंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राग्निः



सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्यराशंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समैतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक, बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।

बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-15 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-62 ॥

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरान्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्याः ।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएंगे, अर्थात् आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

”अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ॥

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में



काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

”सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

”सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

देवलोकांश योग

”सदेवलोको बहुयानसेना”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 35 ॥

जिस जातक की जन्मपत्रिका में ग्रह “देवलोकांश” भाग में स्थित हो, वह मनुष्य अनेक प्रकार के यान, और सेना से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 7 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “देवलोकांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप अनेक प्रकार के वाहन और सेना से युक्त, रक्षा मंत्री, पुलिस कमीश्नर, सहायक, पुलिस कमीश्नर, पुलिस अधीक्षक अथवा पुलिस/सेना विभाग के उच्चाधिकारी होंगे।

वासि योग

”व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

”धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1



आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

